A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 08 सितंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 329, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चीन हमारे लिए अहम, पर अमेरिका विरोधी एकता अभी जल्दबाजी

आशुतोष वार्ष्णेय

जैसे मैं यह कॉलम बोस्टन से लिख रहा हूं, अमेरिका के सबसे बड़े अखबारों में प्रधानमंत्री मोदी, राष्ट्रपति पुतिन और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की तियानजिन बैठक की तस्वीरें, तीनों मुस्कुराते हुए और हाथ मिलाते हुए, मुख्य समाचार के रूप में उभरी हैं। सब-थीम यह भी है कि राष्ट्रपति ट्रंप की नीतियां उन्हें करीब ला रही हैं और शायद अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीति (जियोपॉलिटिक्स) में अमेरिका-विरोधी एकता का रास्ता खोल रही हैं।

अमेरिका-विरोधी एकता की बात शायद जल्दबाज़ी होगी। कम से कम तीन में से दो देशों, चीन और भारत, के अमेरिका के साथ अहम संबंध हैं, जिन्हें तोड़ना बहुत बड़ी कीमत पर संभव है। गिरावट की बात के बावजूद, अमेरिका अभी भी दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 2024 के अंत तक, वर्ल्ड बैंक के अनुसार, अमेरिका का जीडीपी 29ï18 ट्रिलियन डॉलर था, जो विश्व अर्थव्यवस्था (111.33 ट्रिलियन डॉलर) का 26.2 प्रतिशत है। इतना बड़ा बाज़ार आसानी से नकारा नहीं जा सकता। असल में, ज्यादातर देश और कंपनियाँ इसे पाने की कोशिश करेंगी।

लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि ट्रंप की अमेरिका की पोस्ट-कोल्ड वॉर विदेश नीति से बिल्कुल अलग नीतियां, खासकर आर्थिक और राजनीतिक उपकरण के रूप में व्यापार शुल्क (टैरिफ) के इस्तेमाल से, नए भू-राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य बना रही है। देशों को अपनी विदेश नीतियों में बदलाव करते समय इन तब्दीलियों को ध्यान में रखना होगा। ज़ाहिर है, ट्रंप चंचल और अचानक नीति बदलाव करने वाले माने जाते हैं, इसलिए उनके नीतिगत बदलाव पूरी तरह असंभव नहीं हैं। हालांकि, तीन चीज़ें शायद स्थिर रहेंगी- व्यापार शुल्क का इस्तेमाल, इमिग्रेशन का विरोध, और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा में अमेरिकी निवेश कम होना। इन क्षेत्रों में बदलाव, अगर होंगे भी, तो सिर्फ मात्रा में होंगे। असल में बड़े बदलाव केवल तब हो सकते हैं जब इन नीतियों का असर उनके समर्थकों के लिए विनाशकारी हों, जैसे महंगाई बढ़ने से या अगर अदालतें अब से ज्यादा कड़ी कार्रवाई करें।

ट्रंप के व्यापार शुल्क से बुरी तरह झटका खाने के बाद भारत को अपने आगे का रास्ता कैसे सोचना चाहिए? मेरा मानना है कि चीन भारत की विदेश नीति में हाल के वर्षों से भी अधिक केंद्रीय भूमिका निभाएगा। लेकिन भारत अपने हितों को चीन के साथ कैसे आगे बढ़ाएगा, यह एक जटिल काम रहेगा।

पहली जटिलता यह है कि अब भारत चीन के सामने काफी कमजोर स्थिति से काम करेगा। जब अमेरिका भारत को चीन के खिलाफ एक मजबूत किला मानता था, कम से कम इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में, तो अमेरिकी समर्थन ने दिल्ली की ताकत बढ़ाई थी। अगर अब हम मान लें कि अगले कुछ साल के लिए इंडो-पैसिफिक में ताकत संतुलन का असर नहीं रहेगा, तो भारत चीन से केवल एक अकेली ताकत के रूप में निपटेगा, न कि अमेरिका के समर्थन वाली ताकत के रूप में।

फिर भी, चीन के साथ संबंध बनाने में भारत का हित है। यह आज दुनिया की दूसरी महाशक्ति है, जो आर्थिक और रणनीतिक शक्ति दोनों रखती है। अगर भारत की अर्थव्यवस्था पिछले तीस साल में सालाना 8-9 प्रतिशत की दर से बढ़ती, तो यह कुछ हद तक चीन के बराबर हो सकता था। भारत की आर्थिक वृद्धि 1991 के बाद बढ़ी, लेकिन यह कभी चीन के स्तर तक नहीं पहुंची।

सरकारी हलकों में यह कहा जाता है कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। लेकिन यह भारत और चीन के बीच के अंतर के बारे में कुछ नहीं बताता। 2024 के अंत तक भारत का जीडीपी 3.9 ट्रिलियन डॉलर था (हाल ही में यह 4 ट्रिलियन डॉलर का आंकड़ा पार कर गया). यह यूनाइटेड किंगडम (3.6 ट्रिलियन डॉलर) और फ्रांस (3.2 ट्रिलियन डॉलर) से अधिक था, लेकिन यह केवल चीन के जीडीपी (18.7 ट्रिलियन डॉलर) का लगभग पांचवां हिस्सा था। जब कुल अर्थव्यवस्था का आकार देखा जाए, तो यहां तक कि जर्मनी (4.7 ट्रिलियन डॉलर) और जापान (4 ट्रिलियन डॉलर), जो उस समय तीसरी और चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं थीं, भी चीन से काफी पीछे थे।

यह अंतर भारत के लिए गंभीर नतीजे रखता है। ट्रंप के टैरिफ के बाद अमेरिकी बाजारों में लगभग 65-70 प्रतिशत भारतीय निर्यात के खरीदार खो गए हैं। एक बाजार विविधीकरण रणनीति जरूरी है, और दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में अवसर तलाशना ही समझदारी है। जबकि भारत दुनिया की अर्थव्यवस्था का केवल 3.5 प्रतिशत है, चीन का यह आंकड़ा 16.8 प्रतिशत है। चीन का भारत के मुकाबले व्यापार में ज्यादा फायदा है। अमेरिकी बाजारों के काफी कम होने के कारण, भारत को इस घाटे को कम करने के लिए चीनी बाजारों की तलाश करनी होगी।

ट्रंप की नीतियों का एक और भयंकर आर्थिक असर होगा, जिसके लिए भारत को विकल्प खोजने होंगे। ये भारत में संभावित अमेरिकी निवेश को कम कर देंगी। ÷चाइना प्लस वन÷ रणनीति का मूल विचार यह था- बढ़ते अमेरिकी-चीनी तनाव से बचने के लिए, अमेरिकी निवेशक धीरे-धीरे चीन से बाहर आएंगे और वियतनाम, मलेशिया, थाईलैंड और भारत जैसे देशों में निवेश करेंगे। एप्पल ने मुख्य रूप से भारत को चुना, जबकि कई अन्य कंपनियों ने वियतनाम में निवेश किया। एप्पल का भारत से निर्यात फिलहाल अमेरिकी टैरिफ से बच गया है, लेकिन अन्य निवेशकों के लिए ऐसा जरूरी नहीं है। इसलिए, भारत में अमेरिकी निवेश लगभग निश्चित रूप से घटेगा।

बड़ी पूंजी होने के कारण, चीन संभावित रूप से इस निवेश अंतर को भर सकता है। चीन अब सिर्फ श्रम-गहन उत्पादन (कपड़े, जूते, खिलौने) में विशेषज्ञ नहीं है। यह तकनीकी रूप से उन्नत क्षेत्रों (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, टेलीकम्युनिकेशन और रोबोटिक्स, इलेक्ट्रिक कार, एयरोस्पेस और समुद्री इंजीनियरिंग, पवन और सौर ऊर्जा) में नई ऊंचाइयां छू रहा है।

एक और गैर-अमेरिकी बाजार है जो चीन के बराबर है। अगर यूरोपीय संघ (ईयू) को एक आर्थिक इकाई के रूप में देखा जाए, तो इसका जीडीपी 19.4 ट्रिलियन डॉलर है। इसलिए गैर-अमेरिकी विकल्प खोजने के लिए चीन और ईयू दोनों में अवसरों का पता लगाना चाहिए।

एक महत्वपूर्ण जटिलता ज़रूर है। भारत का चीन के साथ सुरक्षा संबंध कठिन है। चीन पाकिस्तान का सबसे बड़ा रक्षा सहयोगी और हथियार आपूर्तिकर्ता है। और इसका भारत के साथ एक अनसुलझा सीमा विवाद भी है।

संभावित आर्थिक संबंध के तर्क से सुरक्षा तर्क कैसे प्रभावित होंगे? इस प्रश्न का समाधान करना भारत की चीन नीति के लिए एक बड़ी चुनौती होगी।

(द प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पंजाब जाएंगे मोदी, बाढ़ के हालातों का लेंगे जायजा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में विनाशकारी बाढ़ ने हाहाकार मचा रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी पंजाब में बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा करने वाले हैं। जानकारी के मुताबिक वह 9 सितंबर को पंजाब जाएंगे और बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा करेंगे। पीएम मोदी गुरदासपुर जाकर जमीनी स्तर पर हालात देखेंगे। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बड़े राहत पैकेज का भी ऐलान कर सकते हैं। बाढ़ में मरने वालों की संख्या बढ़कर 46 हो गई है, जबकि 1.75 लाख हेक्टेयर भूमि पर खड़ी फसलें बर्बाद हो गई हैं। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, सेना, सीमा सुरक्षा बल, पंजाब पुलिस और जिला प्रशासन द्वारा राहत और बचाव अभियान युद्धस्तर पर चलाया जा रहा है। पंजाब दशकों में आई सबसे भीषण बाढ़ का सामना कर रहा है। हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के जलग्रहण क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण सतलुज, ब्यास और रावी नदियों तथा मौसमी नालों के उफान के चलते यह स्थिति बनी है। इसके अलावा, हाल के दिनों में पंजाब में हुई भारी बारिश ने हालात को और गंभीर कर दिया है।

- **9 सितंबर को दौरा, बड़े राहत पैकेज का हो सकता है ऐलान**

जिससे लोगों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। अधिकारियों ने बताया कि शनिवार को पोंग बांध का जलस्तर मामूली घटकर 1,394.19 फुट दर्ज किया गया, हालांकि यह अब भी उसकी अधिकतम सीमा 1,390 फीट से चार फुट ऊपर है।

देवतालाब और नईगढ़ी में बनेंगे नए तहसील भवन

देवतालाब, बनारस और प्रयागराज धार्मिक क्षेत्र का अनूठा त्रिकोण : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **शिव मंदिर में होगा शिवलोक का निर्माण**
- **मुख्यमंत्री ने 241 करोड़ 33 लाख रुपए के निर्माण कार्यों का किया शिलान्यास और लोकार्पण**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कहा है कि शिव मंदिर देवतालाब अदभुत है। यहां पांच तत्वों का आभास होता है। ऐसा अद्भुत मंदिर केवल विश्वकर्मा जी ही बना सकते हैं। देवतालाब, बनारस और प्रयागराज महत्वपूर्ण धार्मिक त्रिकोण हैं। देवतालाब आस्था, इतिहास और आनंद का संगम है। यह श्रृंगी ऋषि की तपोभूमि है। ऐसी मान्यता है कि देवतालाब के शिव का दर्शन करने पर ही चारधाम की यात्रा का फल मिलता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को मऊगंज के देवतालाब स्टेडियम में आयोजित विकास कार्यों के लोकार्पण-शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने 241 करोड़ 33 लाख रूपये के विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास कर विभिन्न योजनाओं में हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किये और मऊगंज को विकास की अनेक सौगातें देते हुए घोषणाएं भी कीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्यापूजन कर मऊगंज के संयुक्त जिला कार्यालय भवन का शिलान्यास भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि हमारे गांव स्वावलम्बन की अद्भुत मिसाल हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्वदेशी को अपनाते हुए आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरा देश एकजुट है। हमारी इस सामर्थ्य के परिणामस्वरूप ही देश की कीर्ति गाथा सम्पूर्ण विश्व में गूंज रही है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का कथन की '21वीं सदी भारत की होगी' साकार हो रहा है। गर्व का विषय है कि स्वामी विवेकानंद अर्थात श्रद्धेय नरेन्द्र नाथ दत्त की भावना को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चरितार्थ किया है। देश के गरीब, युवा, अन्नदात और महिलाओं का कल्याण तथा विकास तपोनिष्ट प्रधानमंत्री श्री मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सौभाग्य का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इसी माह प्रदेश आगमन के लिए स्वीकृति प्रदान की है। राज्य सरकार ने प्रदेश के किसी भी क्षेत्र में विकास और जनकल्याण के लिए कभी भी संसाधनों की कमी नहीं होने दी, इसी का परिणाम है कि प्रदेश में चहुंओर विकास का परचम लहरा रहा है।

विश्व की सभी महत्वपूर्ण नीतियों के निर्धारण में भारत है केंद्र बिंदु

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रयागराज और काशी विश्वनाथ के बीच बसा यह स्थान देवताओं की अभिरूचि की अभिव्यक्ति है। उनके स्वयं के लिए भी देवतालाब आगमन सदैव सुखद और भाग्यशाली रहा है। उन्होंने कहा कि सनातन संस्कृति ने विश्व को मानवता का विचार देते हुए जीवन जीने का सही मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान में भी प्रधानमंत्री श्री मोदी की प्रभावशीलता के परिणाम स्वरूप विश्व की सभी महत्वपूर्ण नीतियों के निर्धारण में भारत केंद्र बिंदु बना हुआ है। यह हम सबके लिए गर्व-गौरव और स्वाभिमान का विषय है कि अमेरिका हो या दुनिया का कोई भी अन्य बड़ा देश, सभी प्रधानमंत्री श्री मोदी की स्वीकार्यता के लिए उत्सुक हैं।

मऊगंज को दी अनेक सौगातें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मऊगंज जिले और देवतालाब विधानसभा क्षेत्र को अनेक सौगातें दीं। मुख्यमंत्री ने देवतालाब शिव मंदिर में शिवलोक के निर्माण और नईगढ़ी एवं देवतालाब में तहसील भवन निर्माण की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि देवतालाब के अस्पताल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उन्नयन किया जायेगा। देवतालाब के शासकीय महाविद्यालय में ऑडिटोरियम और अतिरिक्त कक्षों का निर्माण किया जाएगा। अनुसूचित जाति और जनजाति विद्यार्थियों के लिए दो छात्रावास भवन बनाए जाएंगे। बहुती जल प्रपात को पर्यटन विकास निगम के माध्यम से विकसित किया जायेगा।

खेत में किसान और सीमा पर जवान का सम्मान हमारी सरकार की प्राथमिकता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि खेत में किसान और सीमा पर जवान दोनों का सम्मान हमारी सरकार के लिए सर्वोपरि है। किसान सम्मान निधि तथा अन्य प्रोत्साहन गतिविधियों के माध्यम से राज्य सरकार किसान कल्याण के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। पर्याप्त सिंचाई और बिजली की उपलब्धता प्रदेश के सभी क्षेत्रों में सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि हाल ही में हनुमना उद्वहन सिंचाई परियोजना मंजूर की गई है। जिससे रीवा, सीधी, सिंगरौली और मऊगंज जिलों की एक लाख 40 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में सिंचाई सुविधा मिलेगी। रीवा के सोलर प्लांट की बिजली से दिल्ली की मेट्रो रेल दौड़ रही है। मऊगंज के घुरेहटा में बाबा रामदेव के पतंजलि संस्थान द्वारा एक हजार करोड़ रुपए की लागत से कृषि पर आधारित उद्योगों का विकास किया जा रहा है। इससे लाखों किसान लाभान्वित होंगे। उज्ज्वला गैस योजना से 64 हजार से अधिक गैस के कनेक्शन दिए गए हैं। मऊगंज में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में 44 हजार गरीबों को प्रधानमंत्री आवास योजना से पक्के आवास मिले हैं।

सुप्रभात

आँख भर आई किसी से
जो मुलाक़ात हुई
ख़ुश्क मौसम था मगर
टूट के बरसात हुई
दिन भी डूबा कि नहीं ये
मुझे मालूम नहीं
जिस जगह बुझ गए
आँखों के दिए रात हुई
कोई हसरत कोई अरमाँ
कोई ख़्वाहिश ही न थी
ऐसे आलम में मिरी
ख़ुद से मुलाक़ात हुई
इसी होनी को तो
क़िस्मत का लिखा कहते हैं
जीतने का जहाँ मौक़ा था
वहीं मात हुई
इस तरह गुज़रा है
बचपन कि खिलौने न मिले
और जवानी में बुढ़ापे से
मुलाक़ात हुई

– मंज़र भोपाली

बीजेपी और मोदी सरकार को बचा रहा है चुनाव आयोग

- **कर्नाटक में मतदाता धोखाधड़ी को लेकर खरगे का निशाना**

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने निर्वाचन आयोग पर अहम जानकारी छिपाने का आरोप लगाया है। साथ ही उन्होंने दावा किया कि चुनाव आयोग वोट चोरी के लोगों को बचा रहा है। खरगे ने तंज कसते हुए सवाल किया, क्या भारत चुनाव आयोग अब वोट चोरी के लिए बीजेपी का बैक-ऑफिस बन गया है। मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को एक सोशल मीडिया पर एक रिपोर्ट शेयर की, जिसमें दावा किया गया था कि 2023 कर्नाटक विधानसभा चुनाव से पहले फॉर्म सात में जालसाजी कर वोटरों को हटाने के प्रयास से संबंधित मामला ठंडा पड़ गया है। क्योंकि चुनाव आयोग ने आरोपियों को पकड़ने के लिए महत्वपूर्ण आंकड़े शेयर नहीं किए हैं। चुनाव आयोग की तरफ से खरगे के इन आरोपों पर अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

अंदाज ए मोदी

बीजेपी कार्यशाला में सबसे पीछे बैठे पीएम मोदी

पार्टी ने जीएसटी स्लैब में बदलाव पर प्रधानमंत्री को दिया धन्यवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा सांसदों की दो दिन की वर्कशॉप का आज पहला दिन था। यह वर्कशॉप दिल्ली में संसद परिसर में हो रही है। पीएम मोदी भी इसमें शामिल हुए। वे हॉल में सबसे पीछे की सीट पर बैठे। गोरखपुर से बीजेपी सांसद रविकिशन और राज्यसभा सांसद संगीता बलवंत ने मोदी की फोटो एक्स पर पोस्ट की, जिसमें वे पीछे बैठे नजर आ रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जीएसटी स्लैब में बदलाव के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद किया गया। यह वर्कशॉप दो दिन में 4 सेशन में होनी है। इसमें पार्टी के इतिहास और विकास पर चर्चा और सांसदों की कार्यकुशलता बढ़ाने पर काम किया जाना है। वर्कशॉप का मकसद उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले 100 फीसदी वोटिंग के लिए सांसदों को सही ट्रेनिंग देना है। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए 9 सितंबर को वोटिंग होगी। इससे पहले 8 सितंबर को पीएम मोदी एनडीए सांसदों के लिए डिनर होस्ट करने वाले थे। जिसे अब कैंसिल कर दिया गया है। यह फैसला पंजाब सहित अन्य राज्यों में आई बाढ़ के चलते लिया गया। सूत्रों के मुताबिक, पीएम मोदी बाढ़ प्रभावित राज्यों का दौरा करेंगे और रिव्यू मीटिंग लेंगे। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात में बाढ़ के चलते काफी नुकसान हुआ है। ट्रेनिंग सेशन में सांसदों को बैलट पेपर पर सही निशान लगाने, चुनाव अधिकारी की ओर से दिया गया पेन का इस्तेमाल करने और बैलट पेपर को सही तरीके से मोड़कर बॉक्स के अंदर डालने की जानकारी दी।

हजरतबल दरगाह विवाद

26 लोग पुलिस हिरासत में

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में 3 सितंबर को हजरतबल दरगाह में राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ के चिन्ह वाली शिलापट्ट तोड़ी गई। इसके अगले दिन 4 सितंबर को अनंतनाग की खिरम दरगाह में फुटब्रिज के उद्घाटन किया गया था। यहां लगाई शिलापट्ट में केवल वक्फ बोर्ड का लोगो था, अशोक चिन्ह नहीं था। उद्घाटन में वक्फ बोर्ड की चेयरपर्सन दरख्शां अंद्राबी भी पहुंची थीं।

- **खिरम दरगाह में बिना अशोक स्तंभ चिह्न वाली शिलापट्ट लगाई**

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 08 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

10 महिलाएं तय करेंगी 26,000+ समुद्री मील की दूरी

- खास मिशन की तैयारी में भारतीय सेना की महिला अफसर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना की दस महिला अधिकारी एक ऐतिहासिक मिशन पर निकलने वाली हैं। वे भारतीय सशस्त्र सेवा पोत (आईएएसवी) त्रिवेणी पर सवार होकर पूरी दुनिया का चक्कर लगाएंगी। यह पहली बार है जब भारतीय सेना की महिलाएं ऐसा कर रही हैं। सेना ने बताया कि इस अभियान में 26,000+ समुद्री मील की दूरी तय की जाएगी। वे भूमध्य रेखा को दो बार पार करेंगी और तीन बड़े केपों को भी पार करेंगी। इंडियन आर्मी ने एक्स पोस्ट में बताया कि टीम दक्षिणी

महासागर और ड्रेक पैसेज जैसे दुनिया के सबसे कठिन समुद्रों का सामना करेंगी। यह अभियान भारत की समुद्री यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह वर्दी में नारी शक्ति, तीनों सेनाओं की एकता और साहस की भावना को दर्शाता है। 11 सितंबर से महिला अफसरों का यह सफर शुरू होगा। सेना ने लिखा, यह सिर्फएक नौकायन अभियान नहीं है। यह भारत के लिए गर्व का क्षण है। यह भारत की समुद्री यात्रा में एक मील का पत्थर है, जो वर्दी में नारी शक्ति, त्रि-सेवा एकता और साहस की भावना को दर्शाता है। बता दें कि आईएएसवी त्रिवेणी एक खास नाव है। इसे भारतीय सेना ने बनाया है। यह लंबी दूरी की यात्राओं के लिए बिल्कुल सही है।

देश भर में वोटर वेरिफिकेशन करेगा ईसी

- सभी राज्यों के अपने प्रतिनिधियों की बुलाई है बैठक
- 2026 में होने वाले विधानसभा चुनाव की है तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। निर्वाचन आयोग के शीर्ष अधिकारी अखिल भारतीय स्तर पर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के क्रियान्वयन की तैयारियों पर राज्यों के अपने प्रतिनिधियों के साथ अगले हफ्ते चर्चा करेंगे। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आयोग ने बुधवार को राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों की बैठक बुलाई है। फरवरी में ज्ञानेश कुमार के मुख्य चुनाव आयुक्त का पदभार संभालने के बाद राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों की यह तीसरी बैठक है। हालांकि, अधिकारियों ने कहा कि 10 सितंबर को होने वाली बैठक इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें अखिल भारतीय स्तर पर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण

की तैयारियों पर चर्चा की जाएगी। आयोग ने कहा है कि बिहार के बाद पूरे देश में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण किया जाएगा। ऐसे संकेत हैं कि यह प्रक्रिया इस साल के अंत में और असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु व पश्चिम बंगाल में 2026 में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले शुरू कर दी जाएगी। एसआईआर का मकसद अवैध प्रवासियों के जन्मस्थान की जांच करके उन्हें वापस भेजना है। यह कदम विभिन्न राज्यों में बांग्लादेश और म्यांमार सहित अन्य देशों के अवैध प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई के मद्देनजर महत्वपूर्ण है। अधिकारियों ने कहा कि निर्वाचन आयोग मतदाता सूचियों की शुचिता की रक्षा के अपने संवैधानिक कर्तव्य के निर्वहन के लिए पूरे देश में एसआईआर शुरू करेगा। उन्होंने बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण के तहत चुनाव अधिकारी त्रुटिरहित मतदाता सूची सुनिश्चित करने के लिए घर-घर जाकर सत्यापन करेंगे।

जेल लाइब्रेरी में काम करेगा देवगौड़ा का पोता प्रज्वल

- रोजाना 522 रुपए मिलेंगे,रेप केस में उम्र कैद काट रहा

बेंगलुरु (एजेंसी)। पूर्व जेडीएस सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा का पोता प्रज्वल रेवन्ना जेल की लाइब्रेरी में काम करेगा। परप्पना अग्रहारा सेंट्रल जेल प्रशासन ने उसकी लाइब्रेरी में ड्यूटी लगाई है। इस काम के बदले उसे रोज 522 रुपए मिलेंगे। जेल प्रशासन का कहना है कि पूरा काम सही से करने पर ही रेवन्ना को पैसे दिए जाएंगे।

अधिकारियों के मुताबिक, रेवन्ना का काम जेल की लाइब्रेरी में कैदियों को किताबें जारी करना और उनका रिकॉर्ड संभालना होगा। जेल नियमों के अनुसार, उम्रकैद भुगत रहे कैदियों को काम करना अनिवार्य है। हर कैदी को उसकी योग्यता और इच्छा के आधार पर काम दिया जाता है। दरअसल, बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने 2 अगस्त को रेवन्ना को नौकरानी से रेप केस में उम्र कैद की सजा सुनाई थी। बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने 2 अगस्त को रेवन्ना पर 11.50 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया था। इसमें से 11.25 लाख रुपए पीड़ित को दिए जाएंगे। इससे पहले कोर्ट ने 1 अगस्त को रेवन्ना को दोषी ठहराया था। उसके खिलाफ रेप के कुल 4 मामले दर्ज हैं। इनमें से यह पहला केस है, जिसमें उसे दोषी ठहराया गया है। रेवन्ना के परिवार के फार्महाउस में काम करने वाली 47 साल की महिला ने अप्रैल 2023 में रेवन्ना के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी।

राजनीति में एंट्री लेने को पुत्र निशांत तैयार

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले जनता दल यूनाइटेड में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के बेटे निशांत कुमार की राजनीति में एंट्री को लेकर हलचल तेज हो गई है। हालांकि, नीतिश कुमार लंबे समय से वंशवाद के खिलाफ मुखर रहे हैं, लेकिन जेडीयू के भीतर अब यह राय बन रही है कि पार्टी को

- बस पिता नीतिश कुमार की परमीशन का है इंतजार

बचाने और मजबूत करने के लिए निशांत की राजनीति में एंट्री जरूरी है। हाल ही में राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) प्रमुख और एनडीए सहयोगी उपेंद्र कुशवाहा ने पटना की रैली में कहा कि अगर निशांत तुरंत राजनीति में नहीं आए तो जेडीयू को चुनाव में नुकसान उठाना पड़ सकता है। एक रिपोर्ट में एक करीबी सूत्र के हवाले से कहा, निशांत राजनीति में आने के लिए तैयार हैं, उन्हें सिर्फ अपने पिता की मंजूरी चाहिए। सूत्र ने आगे कहा,हम वंशवाद को बढ़ावा न देने के मुख्यमंत्री के रुख से वाकिफ हैं, लेकिन हमें व्यावहारिक होना होगा। अगर जेडीयू को

एक पार्टी के रूप में जिंदा रहना है और फलना-फूलना है, तो निशांत को राजनीति में लाना होगा। सिर्फ वही कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भर सकते हैं और पार्टी को मजबूती से खड़ा कर सकते हैं। हाल के दिनों में मुख्यमंत्री की पकड़ को लेकर चिंता बढ़ी है।

बीजेपी और मोदी सरकार को बचा रहा है चुनाव आयोग

- कर्नाटक में मतदाता धोखाधड़ी को लेकर खरगे का निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने निर्वाचन आयोग पर अहम जानकारी छिपाने का आरोप लगाया है। साथ ही उन्होंने दावा किया कि चुनाव आयोग वोट चोरी के लोगों को बचा रहा है। खरगे ने तंज कसते हुए सवाल किया, क्या भारत चुनाव आयोग अब वोट चोरी के लिए बीजेपी का बैक-ऑफिस बन गया है। मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को एक सोशल मीडिया पर एक रिपोर्ट शेयर की, जिसमें दावा किया गया था कि 2023 कर्नाटक विधानसभा चुनाव से पहले फॉर्म सात में जालसाजी कर वोटरों को हटाने के प्रयास से संबंधित मामला ठंडा पड़ गया है।

कॉमरेड शैलेन्द्र शैली चुने गए राज्य सचिव

भोपाल। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मध्यप्रदेश का 21वां राज्य सम्मेलन विगत 29,30 और 31 अगस्त को कॉमरेड शिवमोहन नगर, डबरा जिला ग्वालियर में संपन्न हुआ। सम्मेलन में राज्य सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली,राज्य सह सचिव कॉमरेड हरिद्वार सिंह और कॉमरेड विजेन्द्र सोनी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए ।कोषाध्यक्ष कॉमरेड गुण शेखरण निर्वाचित हुए।

सम्मेलन के पहले दिन विशाल रैली निकाली गई जिसमें प्रदेश के कोने कोने से आए प्रतिनिधियों के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, पार्टी कॉमरेड, खेत मजदूर और महिलाएं शामिल हुए। रैली के उपरांत सम्मेलन स्थल पर मजदूरों के आंदोलन का प्रतीक लाल झंडा फहराया गया और नेताओं ने शहीद वेदी पर पुष्पांजलि अर्पित की सम्मेलन के उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि सीपीआई के राष्ट्रीय सचिव के. नारायणा और डॉ. गिरीश थे। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ गिरीश चंद्र शर्मा ने किया। अध्यक्षता राज्य सचिव कॉमरेड अरविन्द श्रीवास्तव ने की। स्वागत वक्तव्य आयोजन समिति के अध्यक्ष और पूर्व जिला जज कॉमरेड रतन वर्मा ने दिया। आभार आयोजन समिति के महासचिव कामरेड संजीव राजपूत ने एवं संचालन कॉमरेड सत्यम सागर ने किया। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव कॉमरेड जसविंदर सिंह ने बिरादराना संदेश में वामपंथी एकता का स्वर

बुलंद किया एवं ग्वालियर की संघर्षशील वामपंथी विरासत का उल्लेख किया।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने मोदी सरकार की फासीवादी, जनविरोधी और कॉरपोरेट परस्त नीतियों की आलोचना की। दूसरे दिन प्रतिनिधि सत्र आरम्भ हुआ। सत्र की अध्यक्षता एक अध्यक्ष मण्डल ने की कॉमरेड अजीत जैन, सागर, विजेन्द्र सोनी अनूपपुर, संजय नामदेव सिंगरौली, अशोक पाठक और अंजली परमार, ग्वालियर शामिल थे। राज्य सचिव कॉमरेड अरविन्द श्रीवास्तव ने राजनीतिक और सांगठनिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें मध्यप्रदेश की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया और संगठन के विस्तार हेतु लक्ष्य निर्धारित किए गए। रिपोर्ट पर करीब 40 साथियों ने चर्चा की । चर्चा का जवाब कॉमरेड अरविंद श्रीवास्तव ने दिया जिसके बाद सर्वसम्मति से रिपोर्ट को पारित किया गया। राज्य सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। राजेन्द्र गुप्ता जबलपुर ने अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफ के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया। रुद्रपाल यादव इंदौर ने श्रम कानूनों में श्रमिक विरोधी संशोधनों के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया। इंदौर के कार्टूनिस्ट हेमंत शर्मा पर दर्ज मुकदमा खारिज करने की मांग भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 21वे राज्य सम्मेलन में प्रस्ताव के माध्यम से की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी हमेशा से देश के संविधान और लोकतंत्र के पक्ष में खड़ी हैद्य कॉमरेड विनीत तिवारी ने फिलिस्तीन की जनता के पक्ष में प्रस्ताव पेश किया एवं इजरायल के द्वारा लगातार किए जा रहे हमलों, अत्याचारों और दुनिया से आ रही मदद को रोकने के प्रयासों की आलोचना की गई। राज्य सम्मेलन के अंतिम दिन प्रतिनिधियों ने संकल्प लिया कि वे प्रदेश और केंद्र सरकार की जनविरोधी, मजदूर विरोधी, किसान विरोधी एवं कॉरपोरेट परस्त नीतियों के खिलाफ एक राज्यव्यापी जन आंदोलन का बिगुल फूंकेंगे और जनता को उनके अधिकारों तथा संविधान के प्रति जागरूक करेंगे।

इशिबा शिगेरु का जापान के पीएम पद से इस्तीफा

टोक्यो (एजेंसी)। जापान के प्रधानमंत्री इशिबा शिगेरु ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। जापानी ब्रॉडकास्टर एनएचके ने रविवार सुबह इशिबा शिगेरु के पीएम पद छोड़ने का विचार करने के बारे में जानकारी दी थी। इसके कुछ घंटे बाद उन्होंने इस्तीफे का ऐलान कर दिया है। इशिबा का इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब वह घरेलू राजनीति में कई मुद्दों पर घिरे हुए हैं। खासतौर से जुलाई में उच्च सदन के लिए हुए चुनाव में हार के बाद से इशिबा को सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के भीतर आलोचना का सामना करना पड़ा है। ऐसे में पार्टी में विभाजन रोकने के लिए इशिबा ने इस्तीफे का रास्ता चुना है। इशिबा ने पिछले साल अक्टूबर में

- सदन में अपना बहुमत खोने के बाद लिया फैसला

जापान के प्रधानमंत्री का पदभार संभाला था। पद संभालने के वक्त उन्होंने मंहगाई से निपटने, पार्टी में सुधार और कई बड़े वादे किए थे। हालांकि सत्ता में आने के बाद उनको लगातार कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एलडीपी पर राजनीतिक धन उगाही घोटालों के आरोप ने उनकी मुश्किल को बढ़ाया। इशिबा के सत्ता में आने के कुछ ही समय बाद एलडीपी और उसके गठबंधन सहयोगी कोमेइतो ने निचले सदन के चुनाव में अपना बहुमत खो दिया था। इसके बाद जुलाई में उच्च सदन के चुनाव में भी सत्तारूढ़ गठबंधन बहुमत से दूर रह गया। इससे इशिबा पर चुनाव परिणामों की जिम्मेदारी लेकर पद छोड़ने की मांग बढ़ गई। इसके बाद इशिबा के इस्तीफे की बात सामने आई है। जापान की एलडीपी पार्टी सोमवार को अपना नया नेता चुनने के लिए वोटिंग कर सकती है। जापान की स्थानीय मीडिया ने हाल ही में बताया था कि जापान की सत्तारूढ़ एलडीपी नेतृत्व बदलाव के लिए चुनाव कराएगी। मतदान में भाग लेने के लिए पात्र 342 पार्टी सांसदों और क्षेत्रीय प्रतिनिधियों में से 149 ने चुनाव के पक्ष में और 48 ने विरोध में अपनी बात कही थी। 68 साल के शिगेरु इशिबा बड़े राजनीतिक पकिवार से ताल्लुक रखते हैं। वह साल 1986 से प्रतिनिधि सभा के सदस्य हैं। वह साल 2007 से 2008 तक रक्षा मंत्री, 2008 से 2009 तक कृषि और मत्स्य पालन मंत्री रहे हैं। वह साल 2012 से 2014 तक एलडीपी के महासचिव रहे हैं।

कनाडा से भारत के खिलाफ फंडिंग कर रहे खालिस्तानी

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा सरकार ने कबूल कर लिया है कि खालिस्तानी आतंकी संगठन देश की जमीन पर सक्रिय हैं। इन्हें कनाडा में फंडिंग भी मिल रही है। इनका मकसद हिंसा के जरिए नई राजनीतिक व्यवस्था बनाना या मौजूदा सिस्टम में बदलाव करना है। हाल ही में कनाडा की सरकार ने असेसमेंट ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एंड टेररिस्ट फाइनेंसिंग रिस्क इन कनाडा 2025 नाम से एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि बब्बर खालसा इंटरनेशनल और इंटरनेशनल सिख यूथ फेडरेशन जैसे संगठन कनाडा से फंड प्राप्त कर रहे हैं। रिपोर्ट

- बब्बर खालसा इंटरनेशनल और सिख यूथ फेडरेशन का नाम शामिल

के मुताबिक, ये संगठन कनाडा के अलावा कई देशों में प्रवासी भारतीयों से भी चंदा जुटाते हैं। इन खालिस्तानी संगठनों को राजनीतिक मकसद से हिंसा फैलाने वाले चरमपंथी समूह नाम की कैटेगरी में रखा गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि इन संगठनों के पास मजबूत नेटवर्क है और ये कई तरीकों से पैसा जुटाते हैं। इनमें बैंकिंग और मनी सर्विस सेक्टर का दुरुपयोग होता है।

पंजाब में बंटे राहुल की तस्वीर वाले राहत पैकेट

- बीजेपी बोली कांग्रेस की दिलचस्पी राहत कार्य में नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बाढ़ प्रभावित पंजाब में बांटे गए राहत पैकेट्स पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की तस्वीर के बाद राजनीति तेज हो गई है। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने कांग्रेस पर पंजाब में बाढ़ राहत प्रयासों को राजनीतिक रंग देने का आरोप लगाया है। बीजेपी प्रवक्ता ने वीडियो शेयर किया, जिसमें कांग्रेस की तरफ से भेजी गई बाढ़ राहत सामग्री दिखाई गई। इसमें राहुल गांधी की पुरानी तस्वीर वाले स्टिकर के साथ-साथ राहत सामग्री से लदे ट्रकों पर कांग्रेस नेताओं और पार्टी के बड़े पोस्टर लगे थे। बीजेपी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस वास्तविक राहत कार्यों के बजाय राजनीति को प्राथमिकता दे रही है, और 2013 में उत्तराखंड में आई बाढ़

के दौरान भी ऐसा ही एक मामला सामने आया। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने इस मुद्दे को उठाते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, अगर कांग्रेस का उद्देश्य पंजाब में बाढ़ राहत पहुंचाना है, तो वह पार्टी के चुनाव चिन्ह के साथ राहुल गांधी के स्टिकर क्यों चिपका रही है। प्रदीप भंडारी ने लिखा, यह स्पष्ट है कि कांग्रेस की प्राथमिकता बाढ़ राहत नहीं, बल्कि बाढ़ राहत का राजनीतिकरण है। उत्तराखंड में 2013 में भी कांग्रेस ने गांधी-वाड्रा परिवार के लिए बाढ़ राहत देने में देरी की थी। कांग्रेस पार्टी के लिए राजनीति पहले है, राहत आखिर में है। बता दें कि 2013 में उत्तराखंड त्रासदी के दौरान, रुद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी और पिथौरागढ़ में लोगों के लिए राशन और खाद्य सामग्री ले जा रहे कम से कम 500 ट्रक प्रशासन की मंजूरी न मिलने के कारण ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार और हल्द्वानी में कई दिनों तक फंसे रहे। इनमें से 96 राशन से भरे ट्रक राहुल की तरफ से भेजे गए थे।

34 साल बाद काशी में दिन में हुई गंगा आरती

- चंद्र ग्रहण से 9 घंटे पहले लगा सूतक,मंदिरों के कपाट बंद

वाराणसी (एजेंसी)। चंद्रग्रहण पर सूतक लगने के बाद यूपी में मंदिरों के कपाट बंद कर दिए गए। अयोध्या में राममंदिर और हनुमानगढ़ी के कपाट बंद कर दिए गए। वाराणसी में दशाश्वमेध घाट पर शाम को होने वाली गंगा आरती दोपहर 12 बजे की गई। ऐसा 34 साल बाद हुआ है। वहीं, मथुरा के बांके बिहारी मंदिर में भोग आरती करके 12.30 बजे मंदिर के पट बंद कर दिए गए। अब सोमवार सुबह 5.30 बजे कपाट खुलेंगे। चंद्र ग्रहण शुरू होने से 12 घंटे पहले ही ब्रज के ज्यादातर मंदिरों के पट बंद कर दिए गए। बांके बिहारी, श्रीकृष्ण जन्मस्थान, बरसाना स्थित श्रीजी मंदिर के पट दोपहर 12.30 बजे बंद हो गए। अब 8 सितंबर को सुबह मंगला आरती के बाद ही पट खुलेंगे। वहीं, वल्लभ संप्रदाय के द्वारकाधीश मंदिर में भक्त चंद्र ग्रहण के दौरान भी भगवान के दर्शन कर सकेंगे। बांके बिहारी मंदिर में रविवार को राजभोग की सेवा सुबह साढ़े 4 बजे से शुरू हुई। पुजारियों ने मंदिर में प्रवेश कर

भगवान का श्रृंगार किया। इसके बाद साढ़े 5 बजे भक्तों के लिए पट खोल दिए। इसे 10 मिनट बाद श्रृंगार आरती की गई। फिर सुबह 8.10 बजे राजभोग आरती हुई। फिर 8.15 बजे मंदिर के पट बंद कर दिए गए। इसके बाद दोपहर 12.25 बजे पर शयन भोग आरती करके 12.30 बजे मंदिर के पट बंद कर दिए गए। अब सोमवार को सुबह 5.30 बजे कपाट खुलेंगे। श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर में भी दर्शनों के समय में बदलाव किया गया। यहां रविवार को दोपहर 12 बजे तक भक्तों ने दर्शन किए। इसी तरह बरसाना स्थित श्रीजी मंदिर में भी चंद्र ग्रहण से पहले लगने वाले सूतकों के कारण मंदिर के पट दोपहर 12 बजे बंद कर दिए गए। इन मंदिरों में भी सोमवार सुबह 5 बजे मंगला आरती के साथ पट खुलेंगे। संकटमोचन मंदिर के महंत प्रो. विश्वम्भर नाथ मिश्र ने बताया- वाराणसी में आज चंद्र ग्रहण के कारण सभी प्रमुख मंदिरों के कपाट दोपहर की आरती के बाद बंद कर दिए गए। श्री काशी विश्वनाथ, मां अन्नपूर्णा, मां विशालाक्षी का मंदिर ग्रहण के ढाई घंटे पहले तो, काशी के कोतवाल बाबा कालभैरव मंदिर के कपाट चंद्रग्रहण के डेढ़ घंटे पहले बंद होंगे। 7 सितंबर को बाबा की संध्या आरती शाम 4 से 5 बजे, श्रृंगार भोग आरती 5.30 से 6.30 बजे और शयन आरती शाम 7 से 7.30 बजे तक होगी। इस दौरान दर्शन जारी रहेंगे। शयन आरती के बाद मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाएंगे। इसके बाद 8 सितंबर को मंगला आरती के साथ कपाट खुलेंगे।

सलमान लाला के पास मिली नशे की पुड़िया, ड्रग जिहाद का शक

इंदौर। कुख्यात गुंडा सलमान लाला के बारे में यह जानकारी सामने आई कि वो ड्रग जिहाद में भी शामिल था। हाल ही में सीहोर के पास तालाब में डूबकर इस गैंगस्टर की मौत हुई है। पता चला कि उसने कई हिंदू युवतियों को नशे की लत लगाई थी। युवतियां अब उसके पक्ष में रील बनाकर इंस्टाग्राम पर बहुप्रसारित कर रही हैं। उसके जनाजे की भीड़ में शामिल कई युवक भी ड्रग्स के आदी थे। छोटी खजरानी (एमआईजी) निवासी 28 साल के शाहनवाज उर्फ सलमान लाला की लसूड़िया परिहार (सीहोर) में तालाब में डूबने से मौत हुई थी। सलमान पुलिसवालों को देखकर भागा था।

उसके पास हथियार (पिस्टल) और ड्रग्स भी थी। पिस्टल तो तालाब किनारे मिल गई, पर ड्रग्स रविवार को पोस्टमार्टम के दौरान डॉक्टर ने पेंट की जेब से निकली। यह खुलासा कोतवाली (सीहोर) पुलिस ने किया है। पुलिस सलमान के भाई शादाब उर्फ सिद्धू, कुलदीप साल्दे, सौरभ राठौर और साथी अरुण मालवीय उर्फ डार्लिंग से पूछताछ करने आई थी। चारों को अपराध शाखा ने सीहोर से ही गिरफ्तार किया था। अरुण और सलमान की ड्रग्स सप्लाई के मामले में तलाश थी। तीन दिन पूर्व गिरफ्तार पीयूष चौहान और सत्यम जैन ने ही उसका नाम कबूला था। नशे की लत लगाई- सलमान ने नेटवर्क सोशल मीडिया के जरिए ही बनाया है। उसने एक इन्फ्लुएंसर की आईडी जबरदस्ती ले ली। उसमें लाखों की संख्या में इन्फ्लुएंसर थे। सलमान रातों रात फेमस हो गया और ड्रग्स पीने लगा। वह राजस्थान के प्रतापगढ़ और डग से ड्रग्स खरीदकर सप्लाई करता था। उसके पैडलर सत्यम और पीयूष फार्म हाउस और पब में होने वाली पार्टियों में ड्रग्स की सप्लाई करने लगे थे। सलमान ने संभ्रांत परिवार के युवक-युवतियों को ड्रग्स की लत लगाई। वह फरारी भी उनके फ्लैट पर ही काटता था। उनके साथ ड्रग्स का सेवन करता था। पुलिस ने आलिया, मुस्कान, आरती सहित कई युवतियों को जांच की जद में लिया है। एक्टर एजाज खान आपत्तिजनक पोस्ट डालने के कारण जांच के घेरे में है।

कादरी को नागपुर ले जाएगी पुलिस

इंदौर। लव जिहाद के आरोपी साहिल और अल्ताफ को फंडिंग करने के आरोपी पार्षद अनवर डकैत उर्फ अनवर कादरी और उसकी बेटी आयशा से पूछताछ जारी है। आयशा ने मनी एक्सचेंज एजेंट के माध्यम से नेपाल में होटलों के बिल चुकाना स्वीकार किया। आयशा ने बताया कि वह ई-रिक्शा चालक के साथ एजेंट के पास गई थी। उसने एक हजार रुपये कमीशन भी लिया था। टीआई सियाराम सिंह गुर्जर के मुताबिक अनवर ने नागपुर से नया फोन खरीदा था। पुलिस इसकी तस्दीक करने के लिए नागपुर जाएगी। उधर, पुलिस ने आयशा की सहेली नवनीत कुरैचिया और अनवर के दोस्त मिनाजुद्दीन को भी पूछताछ के लिए बुलाया है। आयशा ने नवनीत का सिम कार्ड चुरा लिया था। अनवर मिनाजुद्दीन का सिम कार्ड चला रहा था।

एमवाय में सर्जरी मुफ्त, वेंट्रल हर्निया की जटिल सर्जरी से जान बचा ली गई

● विश्व स्तरीय सर्जरी निशुल्क, मरीजों के लिए वरदान साबित होगी

इंदौर। अब तक जो महँगी सर्जरी दिल्ली-मुंबई जैसे बड़े शहरों में होती थी और जिस पर तीन लाख से अधिक खर्च आता था, वह सर्जरी इंदौर के सरकारी एमवाय अस्पताल में मुफ्त में की जा रही है। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन एवं प्रोफेसर डॉ अरविंद घनघोरिया ने 50 वर्षीय महिला मरीज (बदला हुआ नाम महिमा) की जान वेंट्रल हर्निया की जटिल सर्जरी कर बचाई। वेंट्रल हर्निया पेट की दीवार में कमजोरी के कारण होता है, जिससे अंग बाहर निकल आते हैं। महिला तीन वर्ष से परेशान थी, हंसने, खाँसने, झुकने पर 10×5 सेमी का हर्निया बाहर आ जाता था। पेट दर्द, बुखार, उल्टी और वजन घटने से हालत गंभीर हो गई थी। ओपीडी में जांच के बाद डॉ घंघोरिया ने तुरंत ऑपरेशन का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि हर्निया बड़ा होने पर अंग फंसने का खतरा बढ़ जाता है और आंत की रक्त आपूर्ति रुकने से मृत्यु तक हो सकती है। मरीज में यही स्थिति थी। जटिल लेप्रोस्कोपिक एब्डोमिनल सर्जरी कर इंट्रापेरिटोनियल ऑनले मेश (आईपीओएम) तकनीक से 20×15 सेमी की विशेष जाली लगाई गई। इससे महिला की जान बच गई और वह शीघ्र स्वस्थ हो रही है। डीन डॉ घंघोरिया ने कहा कि गरीब मरीजों की सेवा करना ही उनका कर्तव्य है। अब इंदौर में भी विश्वस्तरीय सर्जरी निशुल्क उपलब्ध है, जो मरीजों के लिए वरदान साबित होगी।

अनंत चतुर्दशी समारोह

हुकुमचंद मिल की झांकी प्रथम, अखाड़ों में छोगालाल व चंद्रपाल उस्ताद अव्वल

शहर की परम्परा के अनुरूप रातभर निकला नयनाभिराम झांकियों व अखाड़ों का कारवां

इंदौर। शनिवार रात शहर की सड़कें अनंत चतुर्दशी के चल समारोह से रोशन रही। लोगों ने इस उत्सव के प्रति अपनी सहभागिता निभाते हुए शहर की परम्परा को अपार उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ाया। पूरी रात जोश और उल्लास के साथ चल समारोह में निकली झांकियों और अखाड़ों के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने हजारों लोगों का मन मोह लिया।

ऐतिहासिक आयोजन में धार्मिक पौराणिक कथाओं के साथ-साथ सामाजिक संदेश देने वाली झांकियां भी शामिल थी। शाम 6 बजकर 20 मिनट पर खजराना गणेश की झांकी से चल समारोह की शुरुआत हुई। इसके बाद आईडीए, नगर निगम और फिर मिलों की झांकियां सड़कों पर उतरी। झिलमिल झांकियों के निकलते काफिले को देखने के लिए इंदौर वासियों के साथ ही आसपास के शहरों व गांवों के लोग भी ऐतिहासिक समारोह के साक्षी बने। झांकियां निकलने से पहले कलेक्टर व अन्य अधिकारियों ने आरती व पूजन किया। चल समारोह की शुरुआत खजराना गणेश की तीन झांकियों के साथ हुआ। एक झांकी में देशभक्ति के रंग थे। तिरंगे से रंगी ये झांकी देख दर्शकों ने भारत माता की जय के नारे लगाए। दूसरी और तीसरी झांकी धार्मिक आस्था से ओत-प्रोत रही। ऑपरेशन सिंदूर की थीम पर निकली आईडीए की झांकी खास आकर्षण का केंद्र रही। इस झांकी में लड़ाकू विमान दिखाया गया। नगर निगम की एक झांकी में सिंह पर भारत माता को बैठा दिखाया गया। अन्य झांकी में निगम की योजनाएं और मधुमेह व मोटापे के दुष्परिणाम पर जागरूक करते हुए अभियानों की जानकारी दी गई। निगम की झांकी रात 8.30 बजे चिकमंगलूर चौराहा से रवाना हुई। जिला प्रशासन ने झांकी और अखाड़ा निर्णायक समितियों द्वारा पुरस्कार के लिए सर्वसम्मति से श्रेष्ठ झांकियों और अखाड़ों का चयन किया गया। झांकियों में हुकमचंद मिल की नरकासुर का वध झांकी को प्रथम स्थान मिला। इसी तरह अखाड़ों में छोगालाल उस्ताद व्यायामशाला और चंद्रपाल उस्ताद व्यायामशाला अव्वल रहे। इसी तरह महिला वर्ग का प्रथम पुरस्कार श्री रामनाथ गुरू शस्त्रकला व्यायामशाला को दिया गया। कलेक्टर आशीष सिंह ने चल समारोह सुचारू रूप से पूरा होने पर इंदौर के नागरिकों, व्यवस्थाओं से जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों, झाँकी आयोजकों और अखाड़ों के सदस्यों तथा मीडियाकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

निर्णायक समिति के निर्णय- प्रथम पुरस्कार : हुकुमचंद मिल (नरकासुर का वध) - द्वितीय पुरस्कार : राजकुमार मिल (लंका दहन) और मालवा मिल (भगत के वश में है भगवान) - तृतीय पुरस्कार : कल्याण मिल (सेना का शौर्य) - विशेष पुरस्कार : स्वदेशी मिल (महाशिवरात्रि पर शिव पूजा) और होप टेक्सटाइल मिल (गंगा का पृथ्वी पर अवतरण)

हर साल प्रतिवर्ष की तरह इस साल भी परंपरा के निर्वहन में दिए जा रहे मिलों के महत्वपूर्ण योगदान के मद्देनजर पुरस्कार चयन में केवल मिलों की झांकियों को ही शामिल किया गया था।

अखाड़ों के पुरस्कार- चल समारोह में अखाड़ों तथा व्यायाम शालाओं के युवाओं द्वारा हैरत अंगेज प्रदर्शन तथा करतब दिखाए गए। शस्त्र कला की विधा को अखाड़ों तथा व्यायामशालाओं के कलाकारों ने इतनी विविधताओं तथा बारीकियों के साथ प्रस्तुत किया कि दर्शक देखते रह गये। निर्णायक समिति ने इस बार दो विधाओं लाठी तथा दो हाथ के पटे वर्ग में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार के लिए अखाड़ों का चयन किया। अखाड़ा निर्णायक समिति द्वारा इन प्रस्तुतियों की उत्कृष्टता के आधार पर निम्नानुसार निर्णय अनुशंसित किए गए।

लाठी वर्ग में पुरस्कृत - प्रथम : छोगालाल उस्ताद व्यायामशाला - द्वितीय : महावीर व्यायामशाला इतवारिया बाजार - तृतीय : रविदास व्यायामशाला - विशेष : गाजी गुरु व्यायामशाला तथा अहिरवार चैतन्य व्यायामशाला

दो हाथ के पटे वर्ग में - प्रथम : चंद्रपाल उस्ताद व्यायामशाला - द्वितीय : बिंदा गुरु व्यायामशाला - तृतीय : बाबू सिंह उस्ताद व्यायामशाला, नादिया नगर - विशेष - देवीदीन गुरु व्यायामशाला तथा हीरालाल उस्ताद व्यायामशाला

महिला वर्ग में पुरस्कृत - प्रथम : श्री रामनाथ गुरु शस्त्र कला व्यायामशाला - द्वितीय : श्री पंचमुखी गुरू अखाड़ा

बालक वर्ग में - प्रथम : कार्तिक राजपूत (लोधी पंच व्यायामशाला)- द्वितीय : आदित्य यादव (गुरु मोहन सिंह उस्ताद व्यायामशाला) - तृतीय : दिव्यांश बेलिया (महाबलेश्वर व्यायामशाला) - विशेष : विनय भारती (प्रमोद हार्डिया व्यायामशाला) तथा हितेश सोलंकी (बृजलाल उस्ताद व्यायामशाला)

बालिका वर्ग में - प्रथम :परिधि धीमान (धानुक समाज बृजलाल गुरु व्यायामशाला)- द्वितीयः जिया यादव (वीर बलवंत गुरु व्यायामशाला डमरू उस्ताद)- तृतीय :भूमिका यादव (मार्तण्ड राव उस्ताद व्यायामशाला)- विशेष :कनक वर्मा (दास हनुमान व्यायामशाला) तथा लक्ष्मी वैध (छोटू गुरु व्यायामशाला)।

एमवाय का झूठ सामने आया, मां-बाप को हाईजैक करने की कोशिश की गई

चूहे के कुतरने से मरी बच्ची लावारिस नहीं, परिवार ने आरोप लगाया

इंदौर। शहर के एमवाय अस्पताल में चूहों के कुतरने से हुई नवजातों की मौत के मामले में नया मोड़ आया। अस्पताल प्रबंधन पर झूठ बोलने के आरोप लगे हैं। हादसे में मृत में बच्ची को अस्पताल प्रबंधन लावारिस बताकर उसका अंतिम संस्कार करने की तैयारी में था। इसके पहले उसके माता-पिता धार जिले से पहुंच गए।

बताया गया कि उनके साथ जयस संगठन के कार्यकर्ता भी थे, जिन्होंने नारेबाजी शुरू कर दी। आदिवासी बच्ची के लिए न्याय की मांगा। एमवाय के जिम्मेदारों को तत्काल सस्पेंड करने की मांग की। मामले में राजनीति भी शुरू हो गई है। जयस कार्यकर्ताओं की ओर से हादसे में मृत दोनों आदिवासी बच्चों के परिवारों को एक-एक करोड़ रुपए मुआवजा देने और अस्पताल प्रबंधन के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज करने की मांग की गई। प्रदर्शन करने वालों ने कांग्रेस विधायक प्रताप ग्रेवाल पर भी गंभीर आरोप लगाए। कहा कि सरदारपुर के विधायक ने रास्ते में परिवार को रोककर 'हाईजैक' करने की कोशिश की, ताकि खुद क्रेडिट ले सकें। %जयस% का आरोप है कि विधायक परिजनों को अपने साथ एमवाय अस्पताल लाना चाहते थे।

अस्पताल का झूठ सामने - विधायक प्रताप ग्रेवाल भी एमवाय अस्पताल पहुंचे. उन्होंने आरोपों को गलत बताते हुए कहा कि पीड़ित परिवार मेरी विधानसभा क्षेत्र के हैं। मैं सिर्फ उन्हें न्याय दिलाने की कोशिश कर रहा हूं, कोई क्रेडिट लेने की बात नहीं है। अस्पताल प्रबंधन का झूठ भी बेनकाब हो रहा है। पहले कहा गया था कि धार से रेफर होकर आई बच्ची के माता-पिता उसे छोड़कर भाग गए थे, लेकिन, अब सच्चाई सामने आ गई। बच्ची के माता-पिता ने अपना दर्द बयां करते हुए कहा कि मेरी बच्ची को चूहों ने काट लिया और वो मर गई, लेकिन अस्पताल ने हमें कुछ नहीं बताया। हमें कहा गया था कि जाओ, हम फोन करके जानकारी देंगे। पिता ने गुस्से में कहा कि लापरवाही से मेरी बेटी की जान गई है। अगर आज हम नहीं आते तो ये लोग हमसे अंतिम संस्कार का हक भी छीन लेते। अस्पताल के जिम्मेदारों को सस्पेंड कर एफआईआर दर्ज होनी चाहिए।

पूरे सप्ताह अच्छी बारिश के आसार अभी 31 इंच पानी गिरा, 7 बाकी

● सबसे ज्यादा देपालपुर में 40 इंच पानी गिरा, गौतमपुरा पिछड़ा

इंदौर। जिले में सप्ताह भर अच्छी बारिश होने के आसार है। इससे पहले बुधवार से शुक्रवार तक तेज बारिश का दौर चला था। हालांकि, शनिवार को पूरे दिन मौसम साफ रहा। जिले की बारिश का औसत 38 इंच है। अब तक 31 इंच बारिश रिकॉर्ड की जा चुकी है।

शहर में 34.28 इंच बारिश हो चुकी है। जिले में सबसे ज्यादा देपालपुर में 40 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी है, जबकि सबसे कम गौतमपुरा में 22.44 इंच हुई है। जिले को अब 7 इंच और शहर को 3.5 इंच बारिश की जरूरत है। उम्मीद जताई जा रही है कि इस बार इंदौर में औसत से अधिक बारिश हो सकती है। अभी भी प्रदेश के ऊपर एक स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है।

मौसम विभाग के अनुसार अगले 7 दिन तक मप्र में और अच्छी बारिश होने का अनुमान है। लोगों को नदियों, तालाबों से दूर रहने और सावधान रहने का कहा है। बुधवार रात से गुरुवार तक लगभग 7 इंच बारिश दर्ज की गई थी। जबकि सितंबर का औसत कोटा 6 इंच का होता है। यानी केवल चार दिनों में ही सितंबर महीने का औसत कोटा पूरा हो गया।

बारिश के गंदे पानी के कारण उल्टी-दस्त की शिकायत बढ़ी

बारिश का पानी घरों में घुसने से लोग हो रहे परेशान

इंदौर। लगातार हो रही बारिश से शहर के कई इलाकों में बाढ़ सा नजारा है। लोगों के घरों में बारिश और ड्रेनेज का गंदा पानी भर गया है। इस गंदे पानी के कारण लोगों को उल्टी दस्त आदि की बीमारियां भी घर रही है। इन्हें रोकने के लिए फिलहाल नगर निगम किसी प्रकार का कोई कार्य नहीं कर रहा है। सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में उल्टी दस्त बुखार के मरीजों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी भी हो चुकी है। उधर डॉक्टर का कहना है कि बारिश थमने के बाद मरीजों की संख्या में और बढ़ोतरी होगी।

जानकारी अनुसार नगर निगम के इंजीनियरों ने लगभग शहर के हर हिस्से में सड़क और अन्य निर्माणों को लेकर खुदाई कर रखी है। इसके कारण बारिश का पानी निकल नहीं पा रहा है। दूसरी और गंदे पानी से बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है।निर्माण वाले क्षेत्रों में कीचड़, जलजमाव की समस्या ज्यादा है। कई जगह अभी भी रूम सहित झोनल कार्यालय पर सैकड़ों शिकायतें दर्ज हुई हैं। निगम अधिकारियों का भी मानना है कि गंदे पानी और घरों में धूल मिट्टी आने के कारण बीमारियां बढ़ सकती है। ऐसा मामला सामने आने के बाद महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगमायुक्त शिवम वर्मा जलजमाव गंदगी के कारण मुख्यालय में अधिकारियों की बैठक भी लेना पड़ी। महापौर ने अधिकारियों पर नाराजगी भी जताई। आईडीए, एमपीआरडीसी, पीडब्ल्यूडी तथा अन्य विभागों के अधिकारियों की बैठक बुलाई गई जिससे निर्माणाधीन इलाकों में जल निकासी की व्यवस्था ठीक से कर सकें।

गड्ढों में गिरकर लोग घायल- बारिश के कारण शहर में सभी जगह सड़कों की हालत खराब हो गई है तो बड़े-बड़े गड्ढों के कारण वाहन चालक गिर भी रहे हैं। पानी भरा होने के कारण गड्ढे समझ में नहीं आते हैं। कीचड़, गंदगी के कारण भी परेशानी है। मौसमी बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। उल्टी, दस्त, मलेरिया जैसी बीमारियों से लोग अब अधिक पीड़ित हो रहे हैं। नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग ने बीमारियों के नियंत्रण को लेकर अब तक कोई ठोस शुरुआत नहीं की।

इंदौर-उज्जैन के बीच सिंहस्थ से पहले 50 किमी लंबा ग्रीन फील्ड रोड बनेगा

सिंहस्थ में आने वाले श्रद्धालुओं को सरकार सभी सुविधाएं देगी

इंदौर। सिंहस्थ 2028 को लेकर सरकार श्रद्धालुओं को सभी सुविधाएं देने की तैयारी में है। इसके तहत उज्जैन जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए इंदौर से उज्जैन तक ग्रीन फील्ड रोड बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। बताया जा रहा है कि करीब 50 किलोमीटर लंबे इस ग्रीन फील्ड रोड पर 2000 करोड़ से अधिक धन खर्च होगा। इसके बनने के बाद इंदौर से उज्जैन जाने वाले श्रद्धालुओं को पूरे मार्ग पर हरियाली दिखाई देगी। साथ ही गर्मी का भी एहसास कम होगा। जानकारी अनुसार सिंहस्थ महापर्व में जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए उज्जैन से सबसे करीब इंदौर ही पड़ेगा। इसलिए अन्य प्रदेशों और विदेशों से भी आने वाले श्रद्धालु सीधे इंदौर ही आएंगे और यहां से सड़क और अन्य साधनों से उज्जैन के लिए रवाना होंगे। ऐसी स्थिति में इंदौर से उज्जैन के बीच ग्रीन फील्ड रोड बना देने से श्रद्धालुओं को न केवल बेहतर एहसास होगा बल्कि गर्मी भी काम अनुभव होगी। इसके लिए सरकार में 2000 करोड़ रुपए के लगभग लोकधन अलाट किया है। यह सड़क फोर लेन की होगी। इसके साथ अब सर्विस रोड भी बनाई जाएगी। इसे पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाया जाएगा। स्थानीय लोगों की मांग के चलते इस ग्रीन फील्ड रोड के साथ सर्विस रोड भी बनाए जाने का निर्णय लिया गया है।

दिसंबर 2027 तक की लिमिट- बताया जा रहा है कि इंदौर उज्जैन ग्रीन फील्ड रोड का निर्माण बहुत तेजी से और गुणवत्तापूर्ण तरीके से किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। पीडब्ल्यूडी सहित अन्य विभागों के अधिकारियों को भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि निर्माण कार्य समय सीमा में पूर्ण कर लिया जाए जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। बताया जाता है कि ग्रीन फील्ड रोड बनाने के लिए दिसंबर 2027 तक की समय सीमा तय की गई है।

संपादकीय

एम.वाय.- अक्षम्य लापरवाही

मध्यप्रदेश के बड़े सरकारी अस्पतालों में जिस असंवेदनशील और लापरवाह तरीके से काम हो रहा है, वह न केवल शर्मनाक बल्कि अक्षम्य अपराध की श्रेणी में आता है। प्रदेश के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल कहे जाने वाले इंदौर के महाराजा यशवंतराव (एम.वाय.) अस्पताल में चूहों के कतरने से एक नवजात आदिवासी बच्चे की मौत और अस्पताल प्रबंधन द्वारा इस मामले में लगातार झूठ बोले जाने से लोगों में स्वाभाविक आक्रोश है। अस्पताल के कुप्रबंधन के कारण चूहे नवजात की चार उंगलियां खा गए। यह सुनकर भी कोई सिहर उठेगा। इस पूरे मामले में बच्चे की सुरक्षा के बजाए अस्पताल प्रशासन इस कोशिश में लगा रहा कि बच्चे को लावारिस घोषित कर ?दया जाए, जबकि उसकी मां लगातार अपने नवजात का हाल पूछती रही। गौरतलब है कि धार जिले के रूपापाड़ा गांव की रहने वाली 25 साल की मंजू कटारा अपनी नवजात बच्ची के इलाज के लिए धार के जिला अस्पताल पहुंची थी, लेकिन अस्पताल ने 31 अगस्त उसे एम.वाय. रेफर कर दिया। उसे अपूर्ण गुदा की समस्या के कारण सर्जिकल उपचार के लिए भेजा गया था। बच्ची की मां का कहना है कि बच्ची को एम.वाय. में चूहे ने काट लिया था। चूहे उसकी चार उंगलियां खा गए। इसकी जानकारी देना तो छोड़िए किसी ने यह भी नहीं बताया कि बच्ची की मौत हो चुकी है। इस बारे में अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ.अशोक यादव का कहना है कि मृतक नवजात बच्ची को उसके परिजन अस्पताल के बाहर छोड़कर चले गए थे. प्रबंधन ने उसे इलाज के लिए एनआईसीयू में रखा था। जबकि बच्ची के परिजनों का आरोप है कि अस्पताल ने उन्हें जानकारी दिए बगैर बच्ची को लावारिस घोषित कर दिया। हालांकि इस संदर्भ में मिले दस्तावेजों से खुलासा हुआ है कि एम.वाय. अस्पताल प्रबंधन झूठ बोल रहा है। धार जिला अस्पताल से बच्ची को एम.वाय.रेफर किया गया था। इसके दस्तावेज मौजूद हैं। फिर बच्ची लावारिस कैसे हुई? बच्ची के परिजनों का यह भी आरोप है कि वे दो दिन तक अस्पताल के बाहर भूखे-प्यासे बैठे रहे। डॉक्टरों ने उन्हें घर भेज दिया और बाद में बच्ची की मौत के बाद उसे लावारिस घोषित कर दिया गया। इस बीच 'जय आदिवासी युवा शक्ति संगठन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष लोकेश मुजाल्दा ने कहा कि हमें जब कुछ गड़बड़ी का इनपुट मिला तो संगठन ने अपने नेटवर्क से उस बच्ची के मां-बाप को ढूंढ निकाला। उनसे मिलने के बाद पता चला कि अस्पताल इस मुद्दे को दबाना चाहता था। इस बीच धार से पहुंचे परिजन और जयस कार्यकर्ताओं ने एमवाय अस्पताल गेट पर प्रदर्शन कर एक-एक करोड़ मुआवजे की मांग की। बच्ची के पिता देवाराम कटारा ने कहा कि बच्ची को भर्ती कराने के बाद हम दो दिन तक अस्पताल के बाहर रुके, भूखे-प्यासे. अंदर जाने नहीं दिया गया। फिर डॉक्टरों ने कहा कि घर जाओ, हम फोन पर जानकारी देंगे। हमारे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है। लेकिन पांच दिन तक किसी ने संपर्क नहीं किया। उन्होंने कहा कि मौत की सूचना उन्हें तब मिली जब एक नेता उनके घर पहुंचे। परिजन ने अस्पताल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए न्याय की मांग की। वैसे एम.वाय. में एक और नवजात की चूहों के काटने से मौत का मामला सामने आया है। इसका सीधा अर्थ यह है कि अस्पताल में चूहों का साम्राज्य है और प्रबंधन उन पर नियंत्रण का कोई उपाय नहीं कर रहा है। एम.वाय. का यह मामला बेहद गंभीर और शर्मनाक है। इस मामले में सरकार को दोषियों के खिलाफ सख्त और तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

दुर्घटनाओं की जिम्मेदारी तय हो

अब तो प्रतिवर्ष न मालूम कितने हादसे होते हैं। दो-चार दिन अखबार में छप जाते हैं परंतु दंडित कोई नहीं होता। यूनियन कार्बाइड में, मिक गैस के रिसन के लिये कौन जवाबदार था, कौन गुनाहगार है इस पर आज तक कोई निर्णय नहीं हुआ। और पीड़ित पक्ष भी केवल पैसा व रियायतें लेकर अपने मृतक पुरखों की मौत को बेच देता है। मप्र में धार में विस्फोट की घटना हुई, फिर हरदा में हुई और ऐसी अनेकों घटनायें उद्वित की जा सकती हैं परंतु सभी गुनाहगार सलाखों के बाहर हैं।

हमारे देश में दुर्घटनायें होती हैं परंतु शायद ही कभी किसी की कोई जवाबदारी तय होती हो। यह चलन केवल आज से नहीं है बल्कि आजादी के बाद से ही लगभग चला आ रहा है। कभी-कभी कुछ राजनैतिक, नैतिकता के आधार पर कदम उठाये जाते हैं। ऐसे कदम वैयक्तिक नैतिकता के नाते मानदंड बनते हैं। परंतु व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं लाते। कुंभ मेले में एक बड़ी दुर्घटना इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में हुई थी, उस समय प्रधानमंत्री स्वरू जवाहर लाल नेहरू थे और वह इलाहाबाद के फूलपुर से सांसद थे। इसमें कई सौ लोग भगदड़ में मर गये थे। कुछ दिन मीडिया पर्व चला, कमेटी बनी, कुछ सुझाव आये और मामला समाप्त हो गया। एक रेल दुर्घटना को लेकर तत्कालीन, रेलमंत्री स्वरू लाल बहादुर शास्त्री ने नैतिक आधार पर इस्तीफा दिया था। उससे उनकी निजी छवि व ऊंचाई बढ़ी परंतु व्यवस्था जहां की तहाँ रही। स्वरू विश्वनाथ प्रताप सिंह उप्र के मुख्यमंत्री थे तो उनके भाई जो जज थे, कि हत्या डाकूओं ने की थी, उन्होंने भी नैतिक आधार पर अपनी असफलता मानकर इस्तीफा दिया था और देश ने जैसे उनके गुरु स्वरू लाल बहादुर शास्त्री को नैतिकता का पर्याय बताया था उसी प्रकार उन्हें भी सम्मानित किया।

इस्तीफे के बाद स्वरू व्ही. पी. सिंह भी प्रधानमंत्री बने। हालाँकि दस्यु समस्या यथावत रही। वैसे तो सबसे बेहतर यह होता कि ये इस्तीफा देने की जगह व्यवस्था को सुधारते, गड़बड़ियां करने वालों को दंडित करते परंतु किसी ने भी वह नहीं किया। अगर इस्तीफा, देने के बाद इन्होंने उस व्यवस्था को सुधारने के लिये चाहे वह रेल की हो या कानून व्यवस्था की, कुछ संघर्ष भी किया होता तब भी कुछ हलचल होती परंतु कालान्तर में उसी व्यवस्था के बड़े हिस्सेदार बने रहे।

अब तो प्रतिवर्ष न मालूम कितने हादसे होते हैं। दो-चार दिन अखबार में छप जाते हैं परंतु दंडित कोई नहीं होता। यूनियन कार्बाइड में, मिक गैस के रिसन के लिये कौन जवाबदार था, कौन गुनाहगार है इस पर आज तक कोई निर्णय नहीं हुआ। और पीड़ित पक्ष भी केवल पैसा व रियायतें लेकर अपने मृतक पुरखों की मौत को बेच देता है। मप्र में धार में विस्फोट की घटना हुई, फिर हरदा में हुई और ऐसी अनेकों घटनायें उद्वित की जा सकती हैं परंतु सभी गुनाहगार सलाखों के बाहर हैं।

पिछले कुछ वर्षों में जो धार्मिक जुनून पैदा हुआ है, उसके कारण भी कई भगदड़ें हुई हैं। ग्वालियर जिले के रतनगढ़ की माता के मंदिर में अचानक पानी छोड़ देने से कृत्रिम बाढ़ आई जिससे बड़ी संख्या में लोग मरे और देवी कृपा से सब शांत हो गया। गुना जिले में भी एक मंदिर में वार्षिक मेले में भारी भीड़ हुई, दुर्घटना में काफी लोग मरे, सरकारों ने मुआवजा दिया और मामला शांत हो गया। ऐसी कितनी ही घटनायें धार्मिक स्थलों पर लगातार होती रही हैं। हालांकि हमारे देश के मीडियाके एक हिस्से का नजरिया धार्मिक मामलों में नितांत अंधविश्वासी जैसा है। एक बार जब बद्रीनाथ, केदारनाथ में अचानक बर्फ पिघलने से बाढ़ आई, भारी तबाही हुई तो पर्यावरणविदों ने इस घटना को वनों के कटाई वालों के खाते में डाल दिया और मीडिया के एक हिस्से ने छापा कि बस केवल मठ बचा रह गया। याने भगवान

केवल खुद को ही बचा पाये। अभी धराली उत्तराखंड में जो घटना हुई और बाढ़ आई उसके बारे में मीडिया ने छापा केवल गीता बच गई। याने छपी हुई गीता की किताब बड़ी संख्या में इंसानों की मौत से अधिक महत्वपूर्ण है। यदि गीता बह भी जाती तो गीता प्रेस से दूसरी प्रति मिल जाती। परंतु जिन इंसानों की जान चली गई क्या उन्हें वापिस लाया जा सकता है?

अभी कुछ दिनों पूर्व देश में तीन और घटनायें घटी,

1. बंगलोर में क्रिकेट के मैच के बाद जश्न मनाने को जो लोग लाखों की संख्या में जमा हुये, वहां भगदड़ मची तथा कई लोग मारे गये। क्रिकेट बोर्ड के लोगों ने पहले से जीत के बाद जश्न मनाने को जो तैयारियां व व्यापक प्रचार किया था उसके मानसिक प्रभाव में लाख से अधिक लोग मैदान में पहुँच गये। इसकी सूचना अधिकृत रूप से पुलिस को थी, न प्रशासन को थी। दो चार दिन अखबार में परस्पर दोषारोपण हुआ, क्रिकेट खिलाड़ी विराट कोहली ने खेद व्यक्त किया और मामला शांत हो गया।
2. तेलंगाना में एक फिल्म के शो के प्रीमियर पर दक्षिण के एक लोकप्रिय अभिनेता को टॉकीज के पास बुलाया गया और उन्हें देखने के लिये जो भगदड़ गची उसमें कई लोग मारे गये। चूंकि उक्त अभिनेता वहाँ की सरकार के खिलाफवाले हैं अतरू यह शायद देश की पहली घटना होगी जहां की अभिनेता पर इस आधार पर आपराधिक प्रकरण दर्ज किया गया कि वह बगैर पुलिस सूचना के ऐसे कार्यक्रम में न पहुंचे जिसके कारण भगदड़ गची और मौतें हुई। परंतु इस प्रकार की कार्यवाही कर्नाटक में नहीं हुई।
3. अभी कुछ दिनों पहले मप्र के सीहोर के एक कथावाचक श्री प्रदीप मिश्रा के आयोजन में शामिल होने के लिये देशभर से हजारों या लाख के आसपास लोग पहुँच गये, वहाँ भगदड़ मची और उस भगदड़ में कई श्रद्धालु मर गये। ऐसा बताया जाता है कि श्री प्रदीप मिश्रा रूद्राक्ष बांटते हैं और देश के आम लोगों में यह प्रचारित है कि इस रूद्राक्ष से मोक्ष मिल जायेगा। यह भी बताया जाता है कि श्री प्रदीप मिश्रा कोई पर्ची निकालते हैं, इस पर्ची में क्या होता है इसकी कोई निजी जानकारी मुझको नहीं है परंतु कुछ लोग कहते हैं कि समस्याओं का हल निकलता है। इतनी गंभीर घटना के बाद भी श्री प्रदीप मिश्रा ने न तो कोई जवाबदारी ली और न प्रशासन ने कोई कार्यवाही की।

कई बार तो ऐसा लगता है कि देश में दो प्रकार के कानून चल रहे हैं, हम जो राजनैतिक पार्टी के लोग हैं, जो समाज परिवर्तन के लिये काम करते हैं, लोगों को सविनय अवज्ञा सिखाने का प्रयास करते हैं, उनके लिये सुप्रीम कोर्ट से लेकर सरकारों तक सबसे बड़े कठोर नियम हैं। एक राजनैतिक दल को यदि धरना देना हो तो कलेक्टर के यहां आवेदन करना होता है, वह आवेदन पुलिस को भेजा जाता है और पुलिस की सहमति के बाद अनुमति दी जाती है। कितना विचित्र है कि एक सविनय अवज्ञा वाले को पुलिस से अनुमति लेनी होती है व दफ्तार के चक्कर काटना पड़ते हैं, इतना ही नहीं 20-30 कालम का एक प्रारूप है जो दिल्ली के संसद मार्ग थाने में भरना होता है, इसे सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर बनाया गया। परंतु यह व्यवस्था व नियम प्रदीप मिश्रा, बाबाओं, क्रिकेट खिलाड़ियों आदि को नहीं है। वे जब चाहे बगैर किसी व्यवस्था के लाख लोग जमा करें, परंतु वे कानून से परे हैं। घटना के पहले या बाद में पुलिस प्रशासन इनकी सेवा में तल्लीन रहता है, ये बाबा लोग कह सकते हैं कि हमने नहीं बुलाया, परंतु यह सत्य नहीं है, सूचना देने के या पहुँचने के कई तरीके होते हैं और जब एक बार बड़ी संख्या में लोग जुड़ जाते हैं तो वह भी स्वतरू विचार करते हैं। सोशल मीडिया भी एक बड़ा माध्यम है। हाल के कुंभ में बकायदा उप्र सरकार के मंत्रियों ने राज्यों में जा जाकर निमंत्रण दिया था इसके बावजूद भी शासन और प्रशासन कोई जवाबदारी लेने को तैयार नहीं। दुर्घटना होने के बाद राज्य सरकारें या केंद्र सरकार, सरकारी कोष से आर्थिक मदद मृतक के परिवार को देती है याने जनता ही जाये, जनता ही मरे और जनता के पैसे से ही मरने वालों के परिवारों को मदद दी जाये। होना तो यह चाहिये कि इन बाबओं या कथावाचकों के पास जो धन जमा है उससे मृतकों को हर्जाना देना चाहिये और जिस प्रकार एक आदमी के विरुद्ध बगैर अनुमति के आयोजन करने के लिये आपराधिक मुकदमा चलाया जाता है, उसी प्रकार इन बाबाओं के विरुद्ध मुकदमा चलाया जाना चाहिये। प्रदेश और देश में कानून का राज नहीं है। कानून के राज का मतलब होता है सबके लिये समान कानून व्यवस्था। परंतु हमारे देश में राजनैतिक सत्ताधीशों, धार्मिक सत्ताधीशों और पूँजी के सत्ताधीशों के लिये कोई कानून नहीं है, ये कानून से परे हैं। जनता को भी अंध विश्वासों से मुक्ति पानी चाहिये और भाग्य व पर्ची के बजाये कर्म और पुरुषार्थ पर भरोसा करना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर विशेष

साक्षरता से सक्षमता का सफ़र

संध्या राजपुरोहित

लेखक पिछले दो दशक से शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शिक्षा क्षेत्र में अब तक का सबसे बड़ा बदलाव है। इसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र और बहुआयामी बनाना है। विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करना इसका प्रमुख लक्ष्य है। जीवन कौशल शिक्षा को इसमें विशेष महत्व दिया गया है ताकि विद्यार्थी केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहें, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखें। कक्षा 6 से व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप की व्यवस्था की गई है ताकि विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव मिले। डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ मातृभाषा आधारित शिक्षा की दिशा में भी ठोस पहल की गई है। इन प्रावधानों का मकसद यह है कि विद्यार्थी केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहें, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखें।

प्रति वर्ष 8 सितंबर को पूरी दुनिया अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाती है। इस अवसर पर हम अक्सर यही सोचते हैं कि साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना जानना है। लेकिन क्या यही शिक्षा और साक्षरता का अंतिम लक्ष्य है? दरअसल, शिक्षा का अर्थ केवल किताबों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं है। शिक्षा वह है, जो व्यक्ति बेहतर नागरिक बनाए, आत्मनिर्भर बनाए, समाज को सशक्त करे और राष्ट्र को सक्षम बनाए। इसी दृष्टि से भारत आज 'साक्षर भारत से सक्षम भारत' के सफर पर आगे बढ़ रहा है।

यूनेस्को की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में अब भी 77.3 करोड़ लोग निरक्षर हैं। भारत में लगभग 25 करोड़ वयस्क निरक्षर हैं। सरकार का लक्ष्य है कि 2027 तक सौ प्रतिशत साक्षरता प्राप्त की जाए। डिजिटल इंडिया, समग्र शिक्षा अभियान और राष्?ट्रीय शिक्षा नीति इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

भारत ने साक्षरता बढ़ाने के लिए लंबे समय से सतत प्रयास किए हैं। 1951 में देश की साक्षरता दर केवल 18.33 प्रतिशत थी। 1981 तक यह बढ़कर 43.57 प्रतिशत हुई और 2011 की जनगणना के अनुसार यह 74.04 प्रतिशत तक पहुँच गई। वर्तमान अनुमानित साक्षरता दर लगभग 80 प्रतिशत है। यह निश्चित ही बड़ी उपलब्धि है, लेकिन चुनौतियाँ अब भी बरकरार हैं। ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी अंचलों और महिलाओं की साक्षरता दर अब भी राष्ट्रीय औसत से कम है। उदाहरण के लिए, मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिलों में साक्षरता दर अब भी राष्ट्रीय औसत से 10 से 15 प्रतिशत नीचे है।

ये आँकड़े इस बात की याद दिलाते हैं कि साक्षरता की संख्या बढ़ाना आवश्यक है, लेकिन उसके साथ-साथ उसकी गुणवत्ता और परिणामों पर भी ध्यान देना होगा।

अक्सर साक्षरता और शिक्षा को एक ही मान लिया जाता है, जबकि दोनों में गहरा अंतर है। कोई व्यक्ति साक्षर है, तो वह अपना नाम लिख सकता है, अख़बार पढ़ सकता है, दस्तावेज़ भर सकता है। लेकिन केवल साक्षर होना पर्याप्त नहीं है। शिक्षित और सक्षम व्यक्ति जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकता है, अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है और समाज में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है। यही कारण है कि आज भारत केवल 'साक्षर' होने से आगे बढ़कर 'सक्षम' बनने की दिशा में सोच रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शिक्षा क्षेत्र में अब तक का सबसे बड़ा बदलाव है। इसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र और बहुआयामी बनाना है। विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करना इसका प्रमुख लक्ष्य है। जीवन कौशल शिक्षा को इसमें विशेष महत्व दिया गया है ताकि विद्यार्थी केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहें, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखें। कक्षा 6 से व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप की व्यवस्था की गई है ताकि विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव मिले। डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ मातृभाषा आधारित शिक्षा की दिशा में भी ठोस पहल की गई है। इन प्रावधानों का मकसद यह है कि विद्यार्थी केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहें, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखें।

आज की शिक्षा प्रणाली केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं रह सकती। ज्ञान तो किताबों और इंटरनेट से भी मिल सकता है, लेकिन वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उनमें संतुलित निर्णय लेने की क्षमता केवल जीवन कौशल शिक्षा से आती है।

साक्षरता जीवन कौशलों के पहलुओं को सशक्त बनाती है। जब कोई बच्चा यह सीखता है कि वह अपनी बात कैसे प्रभावी ढंग से रख सकता है, या कैसे किसी समस्या का समाधान ढूँढ सकता है, तो उसमें आत्मविश्वास स्वत: बढ़ जाता है। यह आत्मविश्वास आगे चलकर उसके करियर, पारिवारिक जीवन और सामाजिक दायित्वों को निभाने में उसकी सबसे बड़ी पूँजी बन जाता है।

यह शिक्षा विद्यार्थियों को निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। जीवन में हर कदम पर निर्णय लेने पड़ते हैं – कौन-सा विषय चुनना है, किस दिशा में करियर बनाना है, कौन-से मूल्य अपनाने हैं। अगर विद्यार्थी में सही-गलत का विवेक और तार्किक सोच विकसित हो, तो वह सही निर्णय लेकर अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकता है।

वर्तमान समय में युवाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती है। परीक्षा का दबाव, करियर की अनिश्चितता और सामाजिक अपेक्षाएँ उन्हें अवसाद की ओर धकेल रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 13,000 विद्यार्थियों ने आत्महत्या की। यानी प्रतिदिन औसतन 36 विद्यार्थी अपनी जान ले रहे हैं।

मध्यप्रदेश के आदिवासीस अंचलों –धार और झाबुआ जिलों में हाल ही में जीवन कौशल शिक्षा पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागी होने के मौके मिले। पहले इन क्षेत्रों के बच्चों में झिझक, आत्मविश्वास की कमी और संवादहीनता आम थी। लेकिन जब विद्यालयों में बच्चों को समूह गतिविधियों, संवाद-आधारित खेलों और समस्या समाधान अभ्यासों से जोड़ा गया, तो उनमें आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित हुई। कई छात्राओं ने कहा कि अब वह कक्षा में प्रश्न पूछने से डरती नहीं है और अपने विचार बेझिझक व्यक्त कर पाती है। यही परिवर्तन जीवन कौशल शिक्षा का वास्तविक प्रभाव है।

अनुसंधान बताते हैं कि जीवन कौशल शिक्षा विशेष रूप से किशोरियों के लिए वरदान साबित हुई है। ग्रामीण अंचलों में कई बार किशोरियाँ जल्दी विवाह और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण पढ़ाई छोड़ देती हैं। लेकिन जीवन कौशल शिक्षा ने उन्हें आत्मविश्वास और विकल्प चुनने का साहस दिया।

मध्यप्रदेश के कई आदिवासी जिलों में सक्षम बालिका कार्यक्रम के अंतर्गत जब किशोरियों को निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास पर कार्यशालाएँ दी गईं, तो कई लड़कियों ने विवाह की बजाय पढ़ाई जारी रखने का फैसला लिया। यह बदलाव साक्षरता से सक्षमता की ओर बढ़ते कदम का प्रतीक है।

यह आँकड़ा केवल संख्या नहीं है, बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने पर गंभीर प्रश्न है। जीवन कौशल शिक्षा इस स्थिति में विद्यार्थियों के लिए ढाल की तरह काम करती है। यह उन्हें तनाव प्रबंधन, असफलताओं को स्वीकार करने और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने की क्षमता देती है।

साक्षर भारत का अर्थ केवल अक्षरों का ज्ञान है, जबकि सक्षम भारत का अर्थ जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण है। आज यदि कोई किसान नई तकनीक अपनाकर उत्पादन बढ़ा रहा है, कोई महिला स्वयं सहायता समूह के माध्यम से परिवार की आय बढ़ा रही है, या कोई युवा स्टार्टअप शुरू कर रहा है—तो यह केवल साक्षरता नहीं, बल्कि सक्षमता का परिचायक है।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस केवल अक्षरज्ञान की याद दिलाने का अवसर नहीं है, बल्कि यह हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं है, बल्कि सशक्त नागरिक, आत्मनिर्भर समाज और सक्षम राष्ट्र का निर्माण करना है। भारत ने साक्षरता की लंबी यात्रा तय कर ली है और अब समय है कि हम इसे अगले पड़ाव तक ले जाएँ—जहाँ हर नागरिक न केवल पढ़ा-लिखा हो बल्कि जीवन कौशल से लैस, आत्मनिर्भर और सक्षम भी हो। साक्षर भारत तभी सार्थक है, जब वह सक्षम भारत की राह दिखाए।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कटाक्ष

आखिर वे किस करवट बैठेंगे

मृदुल कश्यप

लेखक व्यंग्यकार हैं।

वह रोज रोज ही आमादा है। वह टैरिफ लगाने पर आमादा है। टैरिफ कम – ज्यादा करने पर आमादा है। यू टर्न लेने पर आमादा है। वह बात-बात पर आमादा हो जाते हैं। बिना बात के आमादा हो जाते हैं।

टैरिफ उनका शौक बन गया है। टैरिफ ही उनका पेशा हो गया है। वह बार-बार टैरिफ की बात करके एक परिपक्व टैरिफकारा बन गए हैं। वह टैरिफ के वर्ल्ड कप के क्वार्टर फाइनल तक पहुंच गए हैं। आखिर वे किस करवट बैठेगें ? किसी के भी समझ नही आ रहा।

नका जीवन टैरिफ से चलता है। अब टैरिफ ही उनकी प्राणवायु है। टैरिफ ही उनका ईधन है। वह टैरिफ ही खाते हैं, टैरिफ ही पहनते हैं और टैरिफ ही सोते हैं। वह टैरिफ से इतना अधिक घुल मिल गए हैं कि कई बार उन्हें स्वयं मालुम नहीं पड़ता कि वह और टैरिफ अलग अलग है । वह रोज सुबह बिना नागा बिना फ्रेश हुए अपने सबोर्डिनेट से कंफर्म करते हैं। वह पूछते हैं यह तो पक्का है कि मैं आज टैरिफ में संशोधन करूंगा पर किस बात से करूंगा यह समझ नहीं पड़ रहा है। जरा आप लोग मदद करें ।उनके सबोर्डिनेट रूटीन अनुसार उन्हें बिना देखे कह देते हैं कि हे महामहिम !

आप विश्व के सबसे ताकतवर देश के हेड है। आप बेहिचक किसी भी देश का टैरिफ उलट – पुलट कर दीजिए। आप तो ऐसे न थे। इतना सोच विचार आखिर किसलिए ? यह आपको क्या होता जा रहा है ! यह खबर बाहर चली गई कि आप दिमाग लगा रहे है तो गजब हो जाएगा। आपने ऐसा हाल बना लिया तो यह बात निश्चित है कि आप एक दिन टैरिफ बढ़ाना भूल जाएंगे।

अगर लोगों को आपके टैरिफ के उतार चढ़ाव के बिना रहने की आदत पड़ गई तो हम कहीं के नही रहेंगे । इसलिए आप बिना शर्त टैरिफ बढाए। आप सशर्त टैरिफ बढाए। खास तौर पर आज तो टैरिफ बढाए। आज गिफ्ट डे है। वैसे भी आप पर टैरिफ हमेशा फबता है और आज फलेगा भी। हो सकता है कुछ अच्छा प्राप्त हो जाए। कोई देश आपकी बात बिना बहस के मान ले।

वे टैरिफ के क्षेत्र में क्रांति करने के लिए कमर कस के बैठे हैं। वह टैरिफ के रोज-रोज , नए-नए परमाणु विस्फोट कर रहे हैं। वे टैरिफ की खतरनाक सुरंग बिछा रहे हैं। वे इस क्षेत्र में डॉक्टरेट लिए बिना नहीं मानेंगे। वैसे तो उनकी नजर नोबेल शांति पर है। उन्होंने टैरिफ को सात्विकता से आदमखोरी की तरफ धकेल दिया है। उन्होंने मांसाहारी टैरिफ खोल दिया है। यह किसी की बली लिए बिना नहीं उतरेगा और बली आम की ही होती है खास कि नहीं।

उनके टैरिफ की अलग विशेषताएं , अलग ही अदाएं हैं। उनका टैरिफ मौलिक और विशिष्ट है। उनका टैरिफ हैरत अंगेज हाहाकारी है। वे सिर्फ और सिर्फ टैरिफ की ही बात करते है। वह दूसरी किसी बात पर बात करके अपना स्टैण्डर्ड डाउन नही करते ।

उनके टैरिफ में सब कुछ आ जाता है। उनके इस अति विशिष्ट वी. आई. पी. छाप टैरिफ से लगता है कि उनका टाइटैनिक आइसबर्ग से टकराकर डूबने ही वाला है पर वह ऐन समय पर सक्रिय होकर होकर , यू टर्न लेकर अपने जहाज को दूसरी दिशा की ओर बदल देते हैं और साथ एक नया आइसबर्ग पीछे लगवा देते हैं।

दिशा बदलना दया नहीं मजबूरी है क्योंकि वे भी तो सवार है। उस जहाज पर जिसको उन्होंने बचाया था। इस तरह से उन्होंने अपने आप को बचाया है। वह टैरिफ की तारीफ की मिसाइल चाहे कितनी भी दाग ले पर टैरिफ का मानव बम तो नहीं बन सकते ना !

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

राष्ट्रपति के सवाल-अंतिम

न्यायाधीश की तरह काम कर सकते हैं क्या राज्यपाल

निर्वाचित विधायिका के लिए गलत काम करने की शक्ति एक महान शक्ति है, जिसका निपटारा कई मामलों में केवल न्यायालयों में ही संभव है। न्यायालय इसे रद्द कर देते हैं या स्थगित कर देते हैं। अगर राज्यपाल कहने लगे कि मुझे लगता है कि यह विरोधात्मक है और राज्य दो बार कह चुका है कि यह विरोधात्मक नहीं है। पहले उन्होंने आपको भेजा था, उन्हें ऐसा नहीं लगा। दूसरी बार जब राज्य ने आपको वापस भेजा तो उन्हें ऐसा नहीं लगा। आप ऐसा सोचने वाले कौन होते हैं? आप ऐसा नहीं कर सकते।

राष्ट्रपति संदर्भ की बहस करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि राज्यपाल विधेयकों की प्रतिकूलता या अवैधता का न्यायिक समीक्षक नहीं हो सकते। विधेयक को मंजूरी देने के मुद्दे पर राष्ट्रपति के संदर्भ की सुनवाई के दौरान, तमिलनाडु राज्य की ओर से सीनियर एडवोकेट डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी ने सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष तर्क दिया कि राज्यपाल न्यायाधीश की तरह कार्य नहीं कर सकते। वे किसी विधेयक की समीक्षा भी नहीं कर सकते। यह देखना न्यायालय का काम है कि कोई विधेयक संविधान का उल्लंघन करता है या किसी केंद्रीय कानून के प्रतिकूल है। उन्होंने तर्क दिया कि मंजूरी रोकना और विधेयक को विधानसभा को वापस भेजना आपस में जुड़े हुए हैं। राज्यपाल किसी विधेयक को विधानसभा को वापस भेजे बिना उसे रोक नहीं सकते।

सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने पूछा कि क्या राज्यपाल विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए सुरक्षित रख सकते हैं, जब उसे पहली बार राज्यपाल द्वारा लौटाए जाने पर विधानसभा द्वारा बिना किसी संशोधन के पुन: पारित कर दिया गया हो। इस पर श्री सिंघवी ने उत्तर दिया कि प्रथम दृष्टया राज्यपाल का विरोध के मामले में कोई काम नहीं है। फिर भी यदि उन्हें विधेयक इतना विरोधात्मक लगता है तो उन्हें अनुच्छेद 200 के मुख्य भाग में दिए गए तीन विकल्पों का प्रयोग करते हुए उसे प्रथम दृष्टया राष्ट्रपति के लिए आरक्षित रखना चाहिए। लेकिन बाद में वह ऐसा नहीं कर सकते। यदि विरोधात्मक विधेयक कानून बन जाता है तो इसका निर्णय न्यायालय को करना है। उन्होंने कहा कि जब वह इसे राष्ट्रपति के लिए आरक्षित रखते हैं, तब भी वह मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह में कार्य कर रहे होते हैं।

आगे कहा गया कि वह ऐसा इसे पहले संदर्भित करके कर सकते हैं, लेकिन वह इसे दूसरी बार नहीं कर सकते। क्योंकि, इससे पहले प्रावधान का उल्लंघन होता है, जो उन्हें इसे पारित करने के लिए बाध्य करता है। क्योंकि अब आपने विधायिका की इच्छा का प्रयोग किया। यह प्रावधान कहता है कि आपको इसे पारित करना होगा। यदि कोई विरोध, त्रुटि या अवैधता है तो यह केवल न्यायालयों के पास ही उपलब्ध है। वह न्यायिक समीक्षक नहीं हैं। किसी ने कहा, निर्वाचित सरकार का कर्तव्य है कि वह सही काम करे, लेकिन उसके पास गलत काम करने की शक्ति भी है। साथ ही निर्वाचित विधायिका के लिए गलत काम करने की शक्ति एक महान शक्ति है, जिसका निपटारा कई मामलों में केवल न्यायालयों में ही संभव है। न्यायालय इसे रद्द कर देते हैं या स्थगित कर देते हैं। अगर राज्यपाल कहने लगे कि मुझे लगता है कि यह विरोधात्मक है और राज्य दो बार कह चुका है कि यह विरोधात्मक नहीं है। पहले उन्होंने आपको भेजा था, उन्हें ऐसा नहीं लगा। दूसरी बार जब राज्य ने आपको वापस भेजा तो उन्हें ऐसा नहीं लगा। आप ऐसा सोचने वाले कौन होते हैं? आप ऐसा नहीं कर सकते।

डॉ सिंघवी ने शमशेर सिंह के फैसले का भी हवाला दिया, जिसे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने भी पढ़ा था। उन्होंने तर्क दिया कि राज्यपाल के पास विधेयक को विधानसभा में वापस भेजे बिना उसे रोकने का चौथा विकल्प होता है। जब वह इसका इस्तेमाल करते हैं तो विधेयक अस्वीकार हो जाता है। डॉ सिंघवी ने कहा कि यह व्याख्या गलत है, क्योंकि शब्दों को हटाकर अलग अर्थ दिया गया। मुख्य न्यायाधिपति गवई ने जब पूछा कि विधेयक के अस्वीकार होने का वास्तव में क्या अर्थ है तो डॉ सिंघवी ने जवाब दिया कि इसका प्रयोग तब किया जाता है, जब राज्यपाल विधेयक को रोककर रखने के दूसरे विकल्प का इस्तेमाल करते हैं और उसे विधानसभा में भेजते हैं। अगर विधानसभा विधेयक को वापस नहीं करती है तो वह अस्वीकार हो जाता है। जस्टिस नरसिम्हा ने कहा कि अस्वीकार शब्द शायद सही शब्दावली नहीं है। फैसले में इन शब्दों के प्रयोग में भ्रम पैदा किया गया है। उन्होंने कहा कि विधेयक का निरस्त होना सही शब्द है।

डॉ सिंघवी ने सीनियर एडवोकेट हरीश साल्वे और एसजी मेहता द्वारा दिए गए इस तर्क का भी जवाब दिया कि अनुच्छेद 200 धन विधेयक को एक अलग या विशेष श्रेणी का नहीं मानता है। राज्यपाल धन विधेयक को भी रोक सकते हैं। डॉ. सिंघवी ने जब यह तर्क पेश किया तो सॉलिसिटर जनरल मेहता ने आपत्ति जताई और कहा कि उन्होंने कभी यह तर्क नहीं दिया कि धन विधेयक को रोका जा सकता है। हालांकि, डॉ सिंघवी ने जवाब दिया कि सॉलिसिटर जनरल मेहता ने अनुच्छेद 207 का हवाला देकर साल्वे के तर्क का समर्थन किया कि धन विधेयक केवल राज्य स्तर पर राज्यपाल की सिफारिश पर ही पेश किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 207 का गलत संदर्भ दिया गया। क्योंकि यह निजी सदस्यों को धन विधेयक पेश करने से रोकता है। इन्हें केवल राज्य सरकार ही पेश कर सकती है।

डॉ सिंघवी ने आगे कहा कि मैंने अनुच्छेद 207 की फिर से जांच की। अनुच्छेद 207 एक बहुत ही दिलचस्प प्रावधान है। संसद में शुक्रवार की दोपहर आमतौर पर निजी सदस्यों के विधेयकों के लिए होती है। अब तक केवल पांच निजी सदस्य विधेयक ही पारित हुए हैं। वह भी सरकार द्वारा अपनाए गए। अब अनुच्छेद 207 यह अधिनियमित किया गया कि धन विधेयक के लिए आप निजी सदस्य विधेयक नहीं ला सकते हैं। आपको केवल राज्य की सिफारिश पर ही काम करना होगा। इस प्रावधान का हवाला इस बात के समर्थन में दिया जाता है कि राज्यपाल किसी विधेयक को, जो कि एक धन विधेयक है, वापस कर सकते हैं।

यह बात सही है कि राज्यपाल एक प्रभावशाली स्थिति में हैं। वे एक सुपर मुख्यमंत्री हैं। शायद इससे भी आगे। डॉ सिंघवी ने एसजी मेहता द्वारा दिए गए उदाहरणों पर भी आपत्ति जताई। जैसे कि राज्यों द्वारा बनाए गए स्पष्ट रूप से असंवैधानिक कानून, जैसे दूसरे राज्यों के लोगों के प्रवेश पर रोक, एक वर्ग को विशेष सुविधा देना आदि। जिन पर राज्यपाल राज्य विधानसभा से विधेयक वापस आने के बाद दूसरे दौर में अपना निर्णय रोक सकते हैं या राष्ट्रपति के लिए आरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने उन उदाहरणों को 'प्रलय के दिन' जैसा बताया और टिप्पणी की कि अतिवादी उदाहरणों पर संवैधानिक निर्णय नहीं लिए जा सकते।

श्राद्ध

अरुण कुमार डनायक

लेखक गांधी विचारों के अध्येता व समाज सेवी हैं।

पितृ-स्मरण और तर्पण परम्परा

भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा में पितरों का स्मरण और तर्पण एक अनिवार्य कर्तव्य माना गया है। वैदिक साहित्य से लेकर पुराणों और स्मृतियों तक इसके उल्लेख मिलते हैं। यह परम्परा केवल पौराणिक कल्पना नहीं है, बल्कि सामाजिक स्मृति, पारिवारिक एकता और धर्मशास्त्रीय कर्तव्य का संगम है।

ऋग्वेद के श्लोक 10.15.10 में पितरों को 'सोम्य' और 'अग्निष्वात्त' कहा गया है।

आ यन्तु न: पितर: सोम्यासोऽग्निष्वात्ता: पथिभिर्देवयानै:।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

इस मंत्र का भावार्थ है— हमारे पितर सोमरस से प्रफुल्लित और अग्नि में आहुति पाकर तृप्त हुए देवयान मार्ग से हमारे पास आएं। वे इस यज्ञ में स्वधा से प्रसन्न होकर हमसे संवाद करें और हमें आशीर्वाद देकर हमारी रक्षा करें।

यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता 2.6.7) में भी पितरों का आह्वान मिलता है—

नाभिमात्रे जले स्थित्वा चिन्तयेदूर्ध्वमानस:।

आगच्छन्तु मे पितर इमान् ग्रहणन्त्वपोञ्जलीन्॥

यहाँ विधि बताई गई है कि साधक नाभि तक जल में खड़ा होकर एकाग्रचित्त होकर पितरों का ध्यान करे और जल से भरे अंजलि को अर्पित करे। इसका भावार्थ यह है कि जल माध्यम बनकर जीवित और मृत के बीच सेतु का कार्य करता है। तर्पण में प्रयुक्त कुशा आसन और पवित्रता का, तिल स्नेह और तृप्ति का, जवा शक्ति और जीवन-ऊर्जा का और जल जीवन व शांति का प्रतीक है। इन चारों के संयुक्त प्रयोग से देव, ऋषि और पितरों को स्मरण कर उन्हें तृप्त करने की परंपरा हमारे पूर्वजों ने दी, ताकि अर्पण केवल बाहरी क्रिया न रहकर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संवाद बन सके।

अथर्ववेद 18.3.1 में भी पितरों की महिमा और उनकी कृपा का वर्णन है।

ये पितर: सोम्या: सोम्यपाना:, येऽग्निष्वात्ता ये च बार्हदुक्षा:।

अर्थात् वे पितर जिन्होंने सोम का पान किया है, वे अग्निष्वात्त और

बार्हदुक्ष पितर हमारे समीप आएं।

यजुर्वेदीय परम्परा में केवल पितृ पक्ष की ही नहीं, बल्कि माता पक्ष, समाजसेवियों और सम्पूर्ण सृष्टि के प्राणियों को तर्पण का पात्र माना गया है। गरुड़ पुराण में एक श्लोक है—

देवासुरास्तथा यज्ञा नागा गन्धर्वराक्षसा:।

पिशाचा गुह्यका: सिद्धा: कूष्माण्डास्तरव: खगा:॥

जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तव:।

तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाऽखिला:॥

इसका भावार्थ है कि देव, असुर, यज्ञ, नाग, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध, कूष्माण्ड, वृक्ष, पक्षी, जलचर, स्थलीचर, वायुमण्डलीय प्राणी—ये सब मेरे द्वारा अर्पित जल से शीघ्र तृप्त हों। यह श्लोक उस व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है जिसमें मानव अपने तर्पण को केवल पितरों तक सीमित न रखकर समस्त सृष्टि के प्राणियों तक विस्तारित करता है। यह दर्शन भारतीय संस्कृति के 'सर्वभूतहित' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श से जुड़ा हुआ है।

इन वैदिक व पौराणिक सन्दर्भों से स्पष्ट है कि पितरों का स्मरण यज्ञ और तर्पण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग रहा है। यहाँ 'स्वधा' शब्द विशेष ध्यान देने योग्य है। जिस प्रकार देवताओं को 'स्वाहा' से आहुति दी जाती है, उसी प्रकार पितरों को 'स्वधा' से अर्पण किया जाता है। 'स्वधा' केवल आह्वान नहीं है, बल्कि यह पितरों की विशेष तृप्ति का द्योतक है। पितरों के लिए तर्पण मात्र एक कर्मकाण्ड नहीं है। यह जीवित और मृत के बीच सतत संबंध का प्रतीक है। स्मृतिग्रंथों में 'पितृऋण' की धारणा आती है, जिसके अनुसार प्रत्येक मानव अपने पूर्वजों का ऋणी होता है और श्राद्ध-तर्पण द्वारा इस ऋण का निर्वाह करता है। यह धारणा सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करती है। पारिवारिक वंशस्मृति, कुटुम्बीय एकता और परस्पर कर्तव्य-बोध का आधार यही परम्परा है।

पूर्वजों की स्मृति केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह मानव समाज की सार्वभौमिक प्रवृत्ति है। एशिया और विश्व की अनेक संस्कृतियों में यह परम्परा जीवित है।चीन में पारिवारिक एकता और स्मृति का पर्व क्विंगमिंग उत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने पूर्वजों की समाधियों पर जाकर उन्हें भोजन, धूप और कागजी धन अर्पित करते हैं। जापान में ओबोन उत्सव में पूर्वजों की आत्माओं के स्वागत हेतु दीप जलाए जाते हैं, नृत्य होते हैं और घर-मंदिरों में विशेष आयोजन किए जाते हैं। वियतनाम और कंबोडिया में भी पूर्वज-आराधना की गहरी परम्परा है। घर-घर में पूर्वजों की वेदियाँ होती हैं और दैनिक जीवन में भोजन, जल और अगरबत्ती अर्पण किया जाता है।

ईसाई धर्म में 'समस्त आत्माओं का दिवस' और लैटिन अमेरिका का 'पूर्वज स्मरण दिवस' मृतकों की स्मृति में मनाया जाता है, जब लोग कब्रिस्तानों में पुष्प, दीप और प्रार्थना अर्पित कर दिवंगत आत्माओं को याद करते हैं। इस्लाम में कब्र पर जाकर फातिहा पढ़ना और मृतक की आत्मा की शांति के लिए दुआ करना प्रचलित है। रमज़ान और ईद जैसे अवसरों पर भी मृतकों को याद कर उनके नाम पर दान किया जाता है।

जैन और बौद्ध धर्म में भी पितृ-स्मरण की परम्परा है। बौद्ध धर्म में उलम्बना पर्व विशेष है, जिसमें मृत आत्माओं की मुक्ति के लिए अर्पण और प्रार्थना की जाती है और अन्नदान किया जाता है ।

सिख धर्म में पितृ-तर्पण जैसी परंपरा नहीं है; यहाँ ईश्वर-भक्ति और नाम-स्मरण ही प्रधान माने जाते हैं। पूर्वजों की स्मृति में अखंड पाठ, सुखमनी साहिब, अरदास, लंगर और सेवा प्रचलित हैं। पुण्यतिथि पर शबद-कीर्तन कर आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है। सिख दृष्टि में पूर्वजों का सच्चा सम्मान उनके आदर्शों का पालन, नाम-जप, ईमानदार जीवन और दान-सेवा करना है।

इन सभी परम्पराओं की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि मानव समाज में पूर्वजऋणपूजन एक सार्वभौमिक भाव है। इसका मूल भाव यही है कि जीवित मनुष्य अपने अतीत से जुड़कर अपनी पहचान और संस्कृति को सुरक्षित करता है। पितरों की स्मृति केवल धार्मिक आस्था नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति के लिए स्थायित्व और निरंतरता का स्रोत है।

वैदिक साहित्य से प्राप्त पितृ-स्मरण और तर्पण मंत्र मानव सभ्यता के गहनतम आध्यात्मिक अनुभव के प्रतीक हैं। वे बताते हैं कि मनुष्य अकेला नहीं है, वह अपने पूर्वजों,समाजसेवीयों, ऋषियों , देवताओं और सम्पूर्ण सृष्टि से गहरे और अदृश्य सूत्रों में बँधा हुआ है। पितृ-स्मरण परम्परा केवल भारत की धरोहर नहीं है, बल्कि विश्वऋणसंस्कृतियों में विभिन्न रूपों में प्रकट हुई सार्वभौमिक मानवीय प्रवृत्ति है। यही कारण है कि श्राद्ध और तर्पण जैसे अनुष्ठान, चाहे वे किसी भी रूप में हों, आज भी जीवित और प्रासंगिक बने हुए हैं।

वैज्ञानिक पड़ताल

गिरीश जोशी

संस्कृति अध्येता एवं अकादमिक प्रशासक

श्राद्ध- क्या और क्यों ?

श्राद्धपक्ष हिंदू जीवन शैली में अपने पूर्वजों का स्मरण करने, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने एवं उनकी आत्मा को सद्गति मिले इस भावना के साथ किए जाने वाले संकल्पों का पर्व है। आज के समय में समाज वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर दिए गए तर्कों से ही किसी अवधारणा को समझता जो बिलकुल ठीक बात है। श्राद्ध पक्ष के लिए कई बार मन में सवाल उठता है कि जो पूर्वज दिवंगत हो चुके हैं उनके लिए किए जाने वाले किसी भी कार्य का फल उन तक कैसे पहुंच पाता होगा और इस क्रिया को करने से हमें क्या लाभ मिलता है।हमारी संस्कृति में मानव जीवन का मूललक्ष्य जीवन ङ्मरण के चक्र से मुक्त होकर ईश्वर से एकाकार हो जाना है, जिसे मोक्ष कहा जाता है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो वो पशुवत होता है।हमारी संस्कृति- परंपराओं में पिरोए गए संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य को पशुत्व से मानवत्व की ओर तथा मानवत्व से देवत्व की ओर ले जाने का है जिससे मनुष्य मोक्ष को पाने की दिशा में आगे बढ़ सके। जब मनुष्य जीवित होता है तब वो अपने आत्मकल्याण के लिए स्वयं प्रयास करता है किंतु जब वो शरीर को छोड़ देता है तब उसकी आत्मा जिस अवस्था अथवा स्थिति में होती है वहाँ से उच्चलोक में उन्नति के लिए, मोक्ष पाने के लिए शरीर के बिना वो कैसे प्रयास कर सकता है। इसलिए दिवंगत आत्मा की उन्नति का प्रावधान भी हमारी संस्कृति में श्राद्ध के माध्यम से किया गया है।

मनुष्य, शरीर और आत्मा का समुच्चय है। आधुनिक विज्ञान शरीर को पदार्थ (Matter) और आत्मा को ऊर्जा(Energy) कहता है। ये पदार्थ पंच तत्वों धरती, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना हुआ हैं।आत्मा को विज्ञान उर्जा कहता है, इस उर्जा का भी विज्ञान ने दो भागों में वर्गीकरण किया है -1.Electrical (Impulses and Signals) अर्थात विद्युत ऊर्जा जो स्पंदन एवं संकेत के स्वरूप में होती है। 2.Chemical (Reactions) रासायनिक भाग जो प्रक्रिया स्वरूप में होता है।जब ये ऊर्जा या आत्मा, पदार्थ से बने शरीर को छोड़ देती है तब उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। उस पार्थिव शरीर को परंपराओं के अनुसार पंचतत्व में विलीन करने के लिए अंतिम संस्कार किया जाता है। यहाँ सवाल ये उठता है कि शरीर तो अपने मूल तत्वों में जाकर विलीन हो जाता है लेकिन उस आत्मा या ऊर्जा का क्या होता है? आधुनिक विज्ञान ऊर्जा के बारे में कहता है कि " Energy can neither be created nor destroyed - only converted from one form of energy to another"अर्थात ऊर्जा को न तो नष्ट किया जा सकता है न ही बनाया जा सकता है, उसका केवल स्वरूप बदला जा सकता है।

विज्ञान की इस 'ऊर्जा' को भारत के आध्यात्मिक विज्ञान में 'आत्मा' कहा गया। उस आत्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है- 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत:।।' इसका अर्थ हम भली भांति जानते हैं। आज विज्ञान जिस बात को कह रहा है,हमारे शास्त्रों में हजारों वर्षों से ये बात बता दी गई है कि आत्मा अजर व अमर है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक Albert Einstein ने पदार्थ एवं ऊर्जा के अंतरसंबंधों का रहस्य एक सूत्र से दुनिया को समझाने का प्रयास किया। उस सूत्र को E= mcw कहा जाता है।

इस सूत्र के अनुसार इस अखिल ब्रम्हांड में पदार्थ एवं ऊर्जा स्थिर है।अर्थात यदि इस ब्रम्हांड को एक पिंड के रूप में कल्पना करें तो इस पिंड के भीतर का पदार्थ एवं ऊर्जा न तो बढ़ाई जा सकती है न ही घटाई जा सकती है केवल रूपांतरित की जा सकती है। गीता के अध्याय 2 - श्लोक 22 में भगवान ने कहा है 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।' अर्थात- जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को बदल कर दूसरे नये कपड़े धारण कर लेता है, ठीक उसी तरह आत्मा पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नये शरीर में चला जाता है। अब सवाल उठता है कि आत्मा कोई दूसरा शरीर अपनी इच्छा से धारण करता है या किसी नियम के आधार पर करता है।चूंकि पूरी सृष्टि एक नियम से चल रही है जैसे सूर्य का उगना अस्त होना, नवग्रहों का अपने पथ पर भ्रमण, धरती पर चलने वाला ऋतु चक्र आदि। उसी तरह मनुष्य का जन्म तथा मृत्यु के बाद आत्मा की गति आदि भी एक नियम से संचालित है। इस नियम को भगवान श्री कृष्ण ने कर्मफल सिद्धांत के माध्यम से समझाया है।

अपनी संस्कृति में वर्णित सर्वोच्च लक्ष्य (मोक्ष) का लाभ अपने पूर्वजों को मिले,उनकी की दिवंगत आत्मा को सद्गति मिले इस हेतु से और यदि अपने कर्मफल के आधार पर उनका जन्म फिर धरती पर होना है तो यहाँ भी उनको सहायता मिले इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए श्राद्ध किया जाता है। अब सवाल उठता है कि धरती पर किए हुए श्राद्धकर्म के प्रतिफल उस आत्मा विशेष तक तक कैसे पहुँचते है। जैसे हमने पूर्व में देखा कि विज्ञान के अनुसार इस आत्मा का स्वरूप स्पंदनों और संकेतों से मिलकर बना है। विज्ञान कहता है कि इस सृष्टि में दिखाई देने वाली हर वस्तु स्पंदनों का घनीभूत स्वरूप है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि ये सृष्टि ईश्वर के संकल्प का ही प्रतिफल है। हम सब उस ही ईश्वर की संतान हैं।हम भी जब कोई संकल्प अत्यंत निष्ठा एवं श्रद्धा से लेते हैं तो वो संकल्प निश्चित ही साकार होता है। जब किसी भी सतकर्म के आरंभ में हम जो संकल्प लेते हैं उस संकल्प के अनुसार कुछ विशिष्ट स्पंदन और संकेत इस ब्रम्हांड में एक अद्वितीय ऊर्जा का स्वरूप ग्रहण करते हैं और उस संकल्प को पूरा करने के लिए ब्र्म्हांडीय ऊर्जा को एक निश्चित दिशा में कार्य करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

ये प्रक्रिया ठीक वैसे ही काम करती है जैसे आज के आधुनिक शस्त्रों में खोजी गई टारगेट गाइडेड मिसाइल। जब ये मिसाइल किसी एक लक्ष्य का संधान कर दागी जाती है तब ये अपने निर्धारित लक्ष्य पर जाकर टार्गेट को ध्वस्त कर देती है।उसी तरह जब हम संकल्प लेकर किसी कृति को करते हैं, जिसके नाम से संकल्प करते हैं तो उस कृति विशेष का फल उस संकल्प के स्पंदनों पर सवार होकर लक्षित आत्मा तक पहुंच जाता है। भगवान दत्तात्रेय के प्रथम अवतार भगवान श्रीपाद श्रीवल्लभ चरित्रामृत में भगवान इस अखिल ब्रम्हांड की व्याप्ति तथा इसमें स्थित लोकों का वर्णन करते हुए कहते है ....भूगोल के मध्य बिन्दु से ऊपर ध्रुव स्थान तक का क्षेत्र सूर्य लोक है। इसी प्रकार भूगोल के मध्य बिन्दु से दो लाख ब्रम्हांड योजन तक चन्द्र लोक,तीन लाख ब्रम्हांड योजन तक मंगल लोक,पाँच लाख ब्रम्हांड योजन तक बुध लोक,सात लाख ब्रम्हांड योजन तक गुरु लोक,नौ लाख ब्रम्हांड योजन तक शुक्र लोक, ग्यारह लाख ब्रम्हांड योजन तक शनि लोक,चौदह लाख ब्रम्हांड योजन तक सप्तऋषि लोक,पंद्रह लाख ब्रम्हांड योजन तक ध्रुव लोक स्थित है। इसी प्रकार भू मध्य बिंदु से विविध अंतर पर भू, भव,स्वर्,मर्,जनर्, तपर्,सत्यर्,लोक स्थित है।

यदि कोई आत्मा विशेष अपने कर्मों के आधार पर इनमें से किसी लोक में अवस्थित होती है और वहाँ से किसी उच्चतर लोक में जाने के लिए प्रयासरत होती है तो उसे हमारे संकल्प के स्पंदनों से ईंधन के रूप में बल मिलता है। यदि वो आत्मा धरती पर पुनर्-जन्म लेती है तो उसके द्वारा यहाँ किए जा रहे सदकर्मों का मनोवांछित परिणाम देने के लिए वही स्पंदन उत्प्रेरणा का कार्य करते है। हमें अपने आसपास कुछ लोगों को थोड़े से प्रयास में सफलता मिलती दिखलाई पड़ती है तो कुछ को ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है।

श्राद्ध करते समय एक संकल्प लिया जाता हैं ....अहं समस्त पितृ पितामहांनां नाना गौत्राणां पितरानां क्षुत्पिपासा निवृत्तिपूर्वकं अक्षय तृप्ति सम्पादनार्थं ब्राह्मण भोजनात्मकं सांकल्पित श्राद्धं पंचबलि कर्म च करिष्ये।अर्थात ये श्राद्धकर्म मैं अपने पूर्वजों की क्षुत्पिपासा यानी भूख-प्यास की निवृत्ति एवं उन्हे अक्षय तृप्ति प्राप्त हो इस हेतु से कर रहा हूं। चूंकि आत्मा तो अवयव विहीन होती हैं तो क्या उसे भूख - प्यास लगती है। शास्त्र कहते हैं- सद्गति की आशा, अभिलाषा, ईश्वर से एकाकार होने की आकांक्षा आत्मा की भूख- प्यास है। अक्षय तृप्ति यानी मोक्ष प्राप्ति का ध्येय उसे प्राप्त हो, यही कामना इस संकल्प के माध्यम से की जाती है।

पितृतर्पण - श्राद्ध आदि करने के लिए हाथ में कुशा,जौ,काला तिल, अक्षत एवं जल लेकर संकल्प किया जाता है। ये सामग्री आत्मा के रासायनिक भाग को स्पंदित करती है। ये सारी सामग्री संकल्पों के माध्यम से उत्पन्न होने वाले स्पंदनों और संकेतों को प्रबलता प्रदान करने का माध्यम बनती है। ये अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान है। जिस तरह हमारे हाथ में पकड़ा हुआ मोबाइल एक निश्चित आवृत्ति की ध्वनि तरंगों को ग्रहण करता है और प्रसारित करता है ठीक उसी तरह ये सामग्री,स्थान,समय एवं कृति सम्मिलित रूप से हमारे संकल्प रूपी स्पंदनों को किसी लोक विशेष में विशिष्ट स्थान पर पहुंचाने का माध्यम बनती है।

जैसे आधुनिक विज्ञान में उपग्रहों कोअंतरिक्ष में भेजने के लिए अनुकूल समय तय किया जाता है,वैसे ही श्राद्ध पक्ष हमारे स्पंदनों को निर्धारित आत्मा तक पहुंचाने का अनुकूल समय होता है। उसी तरह नासा अपने रॉकेट छोड़ने के लिए एक निश्चित स्थान से ही उन्हें लांच करता है। हमारे देश में श्रीहरिकोटा वह स्थान है जहां से उपग्रहों की अंतरिक्ष में लॉन्चिंग की जाती है। उसी तरह इस अनंत ब्रह्मांड में अपने स्पंदनों को निर्धारित आत्मा तक पहुंचाने के लिए गया, नाशिक, उज्जैन, जलाशयों के तट, स्व निवास आदि स्थानों को श्राद्ध कर्म के लिए अत्यंत अनुकूल माना जाता है। ये स्थान हमारे स्पंदनों को निश्चित आत्माओं तक पहुंचाने के लिए अत्यंत उपयोगी लॉन्चिंग पैड माने गए है। श्राद्ध के अनुकूल समय,स्थान, विधि, सामग्री आदि का चयन हमारे पूर्वजों ने अनेक वर्षों तक अनुसंधान कर मिले परिणामों के आधार पर तय किया है। हमारे संकल्प स्पंदन आत्मा विशेष को सद्गति प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं जिसके फलस्वरूप वो आत्मा हमारे लिए कृतज्ञता के स्पंदन भेजती है। ये स्पंदन धरती पर हमारे संकल्पों को पूरा करने में सहायक बनते है जिसे हम पूर्वजों का आशीर्वाद कहते हैं । श्राद्ध, कृतज्ञता, आत्मोन्नति और संकल्पपूर्ति का पर्व है।

विज्ञान की इस 'ऊर्जा' को भारत के आध्यात्मिक विज्ञान में 'आत्मा' कहा गया। उस आत्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है- 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत:।।' इसका अर्थ हम भली भांति जानते हैं। आज विज्ञान जिस बात को कह रहा है,हमारे शास्त्रों में हजारों वर्षों से ये बात बता दी गई है कि आत्मा अजर व अमर है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक Albert Einstein ने पदार्थ एवं ऊर्जा के अंतरसंबंधों का रहस्य एक सूत्र से दुनिया को समझाने का प्रयास किया। उस सूत्र को E= mcw कहा जाता है।

पुलिस प्रशासन का दावा

गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन सौहार्द और उल्लास के साथ सफलतापूर्वक संपन्न

इधर गणेश पंडालों ने सडकों पर फैली अव्यवस्था को लेकर जाहिर की नाराजगी

बैतूल। शनिवार को अनंत चतुर्दशी पर शुरू हुआ गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन का क्रम रविवार देर शाम तक चलता रहा। पुलिस प्रशासन ने जहां दावा किया कि इस वर्ष जिले में गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन का कार्यक्रम हर्षोल्लास, सामाजिक सौहार्द और धार्मिक उत्साह के साथ संपन्न हुआ, वहीं शहर के कुछ गणेश पंडाल समितियों ने सडकों पर यातयात जाम एवं फैली अव्यवस्थाओं पर नाराजगी जाहिर की है। गणेश पंडालों के सदस्यों का आरोप है कि कोठीबाजार क्षेत्र में सडक निर्माण और सडकों पर गड्ढों की वजह से भारी अव्यवस्थाएं रही। यहां इतनी भी जगह नहीं थी कि झांकी निकलने के दौरान छोटे वाहन साइड से निकल पाये। कई प्रतिमाएं सडक पर गड्ढों की वजह से हिचकोले खाते हुए बमुश्किल पार कराई गई। लल्ली चौक पर रविवार तडके गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान अफरा-तफरी का माहौल भी बन गया। जब गोला गणेश समिति की प्रतिमा के साथ चल रहे फॉरेस्ट गार्ड संजीव गवांडे बेहोश हो गए। उन्हें बमुश्किल भीड़ में से निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया। सूत्रों के मुताबिक जुलूस में प्रतिमा को आगे बढ़ाने में देरी होने के कारण भीड़ रास्ता रोक रही थी। इस

दौरान पुलिस ने भीड़ को हटाने के लिए बल का भी प्रयोग किया। हालांकि ऐसी भी चर्चा है कि पुलिस ने लाठीचार्ज किया, लेकिन पुलिस ने इसे सिरे से खारिज कर दिया है।

गड्ढों से जूझते रहे गणेश पंडाल की झांकियां- शहर के कोठीबाजार क्षेत्र की सडकों पर लल्ली चौक के दोंनो तरफ के हालात बदतर हो गये है। कोठीबाजार क्षेत्र के सबसे व्यस्ततम चौक, लल्ली चौक पर सडक पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढों के कारण लोगों का चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। नगर पालिका द्वारा, इन दिनों यहां पर टू-लेन सडक भी बनाई जा रही है। जिससे लल्ली चौक और बस स्टैंड के सामने की सडक़े वाहन चालकों और गणेश पंडालों के लिए भारी परेशानी का सबब बनी रही। जब टिकारी मार्ग, जहां से धार्मिक जुलूस निकलकर लल्ली चौक पहुंचा, तो जुलूस को बदतर सडक का सामना करना पड़ा। जिम्मेदार विभागों द्वारा न तो सडकों की मरम्मत कराई गई और न ही गणेश समितियां की चल झाँकी को बिना ट्रैफिक जाम के निकालने के लिए कोई प्लानिंग की गई। इसी प्रकार शहर के चौपाटी पर अधूरी बनी टू-लेन सडक के कारण गणेश झाँकी का ट्राला फंस गया था और उसमें रखी प्रतिमा आड़ी होकर खंडित हो गई थी।

जिलेभर में 267 बड़ी और 2,568 छोटी प्रतिमाओं का विसर्जन

पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से हुई चर्चा में उन्होंने बताया कि इस वर्ष गणेश विसर्जन, पूर्ण सामाजिक सौहार्द और धार्मिक उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस पर्व के दौरान जिलेभर में पुलिस प्रशासन, नागरिक समाज, विभिन्न विभागों और संगठनों के सहयोग से संपूर्ण कार्यक्रम को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित तरीके से संपन्न कराया। इस अवसर पर जिलेभर में कुल 2,67 बड़ी मूर्तियों एवं 2,569 छोटी मूर्तियों का सुरक्षित एवं व्यवस्थित विसर्जन किया गया। गणेश विसर्जन की सुरक्षा व्यवस्था और सुचारू संचालन के लिए जिलेभर में कुल 419 पुलिस अधिकारियों एवं जवानों को तैनात किया गया। साथ ही ट्रैफिक वार्डन, होमगार्ड, वन विभाग का बल, सिविल सोसायटी के सक्रिय सदस्य एवं वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के कर्मचारियों ने भी अपने कर्तव्यों का उत्कृष्ट निर्वहन कर इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गणेश प्रतिमा विसर्जन में डूबे व्यक्ति का शव मिला

एसडीईआरएफ ने दूसरे दिन किया रेस्क्यू

बैतूल। गणेश विसर्जन के दौरान शनिवार को डूबे जरढ़ निवासी लक्ष्मण सरिया (45) का शव रविवार को बरामद कर लिया गया। एसडीईआरएफ की टीम ने दो घंटे की मशक्कत के बाद तालाब से शव को बाहर निकाला। शनिवार को लक्ष्मण गणेश विसर्जन के लिए तालाब में गए थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि इस दौरान वह पानी में उतरे और फिर बाहर नहीं आए। तालाब

के किनारे उनकी चप्पल मिली थी। ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। चौकी प्रभारी दिनेश कुमरे ने बताया कि शनिवार शाम को ग्रामीणों और गोताखोरों ने तलाश की। अंधेरा होने के कारण अभियान रोकना पड़ा। रविवार सुबह एसडीईआरएफ टीम ने जाल डालकर शव को बाहर निकाला। रविवार को गांव में लक्ष्मण की मौत से शोक छाया हुआ है। पुलिस ने पंचनामा बनाकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। उल्लेखनीय है कि शनिवार को विसर्जन के दौरान पूरे जिले में दो लोग डूबे थे। बताया जा रहा है कि बैतूल बाजार में डीजे पर डांस करते समय एक व्यक्ति को हार्टअटैक आ गया, जिससे उसकी मौत हो गई।

इनका कहना है -

सभी महत्वपूर्ण पाइंटों पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। लल्ली चौक पर एक कर्मचारी के बेहोश होने से उसे डीजे साउंड के बीच बाहर निकालने हेतु पुलिस को रास्ता बनाना पड़ा था। इसके अलावा शांति समिति की बैठक के दौरान ही हमने सभी गणेश समितियों से अपील की थी कि जिन क्षेत्रों में सड़क निर्माण चल रहा है, वहां झांकी को अनावश्यक लेट न करें, ऐसी कई व्यस्ततम जगहों पर झांकी को अनावश्यक लेट करने के कारण ट्रैफिक जाम हुआ।

- निश्चल एन. झारिया, एसपी बैतूल

आत्मकल्याण करना ही सच्चा धर्म है-गुरुदेव शीतलराज

अखिल भारतीय सामायिक स्वाध्याय संघ ने किया कार्यकर्ताओं व श्राविकाओं का सम्मान

बैतूल। आचार्य हस्तीमल जी के सुशिष्य आडा आसन त्यागी गुरुदेव शीतल राज के सानिध्य में अखिल भारतीय सामायिक स्वाध्याय सम्मेलन का 16वां वार्षिक आयोजन दादावाड़ी में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में देशभर से लगभग 800 श्रावक एवं श्राविकाएं पारंपरिक वेशभूषा में सहभागी बनीं और दादावाड़ी व वरद लान का प्रांगण धर्ममय वातावरण से गूंज उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ सुरेश चंद कांकरिया द्वारा किया गया। संघ के बच्चों ने मंगल आचरण का पाठ कर वातावरण को और अधिक भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर अरुण गोठी, सुरेश जी डुढा, पारसमल जी गोखरू, शाजापुर से अनिल जैन, रायपुर से संतोष अग्रवाल, दुर्ग से एवंता छजेड़, बबला चोपड़ा सहित अनेक गणमान्य जनों ने अपने विचार रखे। शाजापुर के श्रावक संघ ने गुरुदेव से आगामी चातुर्मास की विनती की, जिसे गुरुदेव ने सहर्ष स्वीकार करते हुए शाजापुर को चातुर्मास प्रदान किया। समारोह से पूर्व 6 सितंबर को भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महिला मंडल व बच्चों ने सुंदर नाट्य प्रस्तुति दी। सम्मेलन के दौरान अखिल भारतीय सामायिक स्वाध्याय संघ द्वारा बहुमूल्य योगदान देने वालों में राजीव खंडेलवाल, डॉक्टर अमोल वर्मा, नवीन तातेड, योगेश गोठी, शांतिलाल तातेड, अनिल गोठी, रविंद्र गोठी, अजीत गोठी, ऋषिता जैन, संदीप गोठी, प्रशांत मरोठी, रजनीश जैन, लोकेश पगारिया, नितिन पगारिया, रमन गोठी, मनीष गोठी, अतुल गोठी, उषभ गोठी, शीतल जैन पाठशाला में सहयोग देने वाली श्राविकाओं का सम्मान किया गया।

दान के लिए हाथ सदैव खुले रहने चाहिए

संघ के प्रचार मंत्री सतीश पारख ने जानकारी देते हुए बताया कि गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन सामायिक करनी चाहिए और अधिक से अधिक स्वाध्याय में समय लगाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दान के लिए हाथ सदैव खुले रहने चाहिए, तनिक मात्र भी गुस्सा नहीं करना चाहिए और विचारों में समता भाव रखना चाहिए। गुरुदेव ने समझाया कि यह जीवन दोबारा मिले या न मिले, इस भाव के साथ आत्मकल्याण करना ही सच्चा धर्म है। सम्मेलन के दौरान जलपान से लेकर सायंकालीन भोजन तक की संपूर्ण व्यवस्था अरुण गोठी और योगेश गोठी ने अत्यंत सुंदर ढंग से की। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रवीण जी बंब इंदौर ने व्यक्त किया। जानकारी दी गई कि गुरुदेव का नित्य प्रवचन व मांगलिक स्थानक भवन में आयोजित किया जाएगा।

शासकीय आईटीआई में पहले आओ, पहले पाओ प्रवेश 10 सितंबर तक

बैतूल। जिले की शासकीय आईटीआई संस्थाओं में पहले आओ, पहले पाओ प्रवेश प्रक्रिया के तहत आवेदक 10 सितंबर तक प्रवेश ले सकेंगे। इस प्रक्रिया में ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीयन और चॉइस फिलिंग करने के बाद आवंटन पत्र निकालकर संस्था में दस्तावेज सत्यापन एवं शुल्क जमा करना अनिवार्य है। यदि कोई आवेदक आवंटन के अगले दिन दोपहर 2 बजे तक प्रवेश नहीं लेता है तो उसकी चॉइस फिलिंग स्वत-निरस्त कर दी जाएगी। नोडल प्राचार्य केशव सातपुते ने बताया कि जिले की विभिन्न आईटीआई संस्थाओं में कुछ सीटें रिक्त हैं। इनमें बैतूल आईटीआई में वुडवर्क टेक्नीशियन, महिला आईटीआई बैतूल में स्विंग टेक्नोलॉजी एवं स्टेनो अंग्रेजी, चिचोली आईटीआई में वेल्डर, भीमपुर आईटीआई में कॉस्मेटोलॉजी एवं टेक्नीशियन मैकेट्रोनिक्स, जबकि शाहपुर आईटीआई में वेल्डर एवं ड्रोन टेक्नीशियन ट्रेड शामिल हैं।

गुरु की कृपा से संवर जाता है जीवन- डॉ. योगेश पंडाग्रे

175 रिटायर्ड शिक्षकों को मिला अभिनंदन पत्र और पट्टिका

बैतूल। मध्यप्रदेश प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल द्वारा 5 सितम्बर को किराड़ समाज भवन, संजीवनी हॉस्पिटल के पास, सदर बैतूल में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे रहे। कार्यक्रम में 175 सेवा निवृत्त गुरुजनों का स्वागत पट्टिका और अभिनंदन पत्र भेंट कर किया गया। डॉ. योगेश पंडाग्रे ने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु की कृपा से हमारा जीवन संवर जाता है। उन्होंने सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

शिक्षक की ट्रेन से कटकर मौत, सोनाघाटी रेलवे ट्रैक पर मिला शव

बैतूल। सोनाघाटी रेलवे ट्रैक पर रविवार सुबह एक शिक्षक का शव मिला। मृतक की पहचान अजित बारंगे (40) के रूप में हुई है, जो प्राथमिक शाला ढोंढवाड़ा में पदस्थ थे। कोतवाली पुलिस को सुबह सूचना मिली थी कि सोनाघाटी रेलवे कटिंग पर एक व्यक्ति की लाश पड़ी हुई है। पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में शव की पहचान अजित बारंगे के रूप में हुई। वह मूल रूप से रोंढा गांव के निवासी थे और बैतूल शहर के चक्कर रोड स्थित वैष्णवी धाम कॉलोनी में पत्नी और डेढ़ साल की बेटी के साथ रहते थे। शिक्षक अजित की पत्नी भी पंजाब नेशनल बैंक में कर्मचारी है। परिजनों के मुताबिक वे रात में गणेश विसर्जन जुलूस में शामिल होने के बाद घर आकर सो गए थे। रात में पत्नी के जागने पर उन्हें बिस्तर में न पाकर उनकी तलाश की गई तो वे नहीं मिले। पड़ोस के सीसीटीवी में उन्हें सोना घाटी की तरफ जाते देखने के बाद तलाश की गई। जहां उनका क्षत विक्षत शव मिला। परिजनों के अनुसार अजित देर रात घर से कब निकले, इसकी जानकारी किसी को नहीं है। जांच अधिकारी एएसआई नरेंद्र अजनेरिया ने बताया कि रेलवे स्टेशन मास्टर के मेमो से घटना की जानकारी हुई। जिसमें इटारसी की ओर से आने वाले रेलवे ट्रैक पर आने वाली ट्रेन के ड्राइवर ने स्टेशन पर सूचना दी थी कि कोई व्यक्ति तेज रफ्तार ट्रेन के सामने कूद गया है। खंबा नंबर 846/22 के पास से मृतक का शव बरामद किया गया। कोतवाली पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

संत रामपाल जी महाराज जी के अवतरण दिवस धूमधाम से मनाया

30 जोड़ो का आदर्श दहेज मुक्त विवाह, 319 यूनिट हुआ रक्तदान,3440 लोगों ने भरे देहदान संकल्प के फार्म

बैतूल। रविवार को ग्राम उड़दन स्थित सतलोक आश्रम में संत रामपाल महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में विशाल समागम चल रहा है। आश्रम के सेवादारों ने बताया कि 8 सितंबर 1951 को मानव समाज के कल्याण के लिए पूर्ण परमात्मा संत रामपाल जी महाराज के रूप में धरती पर अवतरित हुए फिर संत रामपाल महाराज को स्वामी रामदेवानंद जी महाराज जी से 1988 में नामदीक्षा प्राप्त हुई थी। आज तक निरंतर संघर्ष करते हुए संत रामपाल जी महाराज जी मानव समाज को पूर्ण मोक्षदायक सतभक्ति प्रदान कर रहे है। जिसमे पूरे मानव समाज को आने का खुला निमंत्रण दिया गया है। इस महाविशाल भंडारे में शुद्ध देशी घी से बने मिष्ठान सब्जी, पूड़ी, दाल,चावल, हलवा आदि का मनमोहक भंडारा दिया जा रहा है। साथ ही संत गरीबदास जी महाराज जी के अमर ग्रन्थ साहिब की अमरवाणी का अखंड पाठ चल रहा है।

कार्यक्रम के दूसरे दिन संत गुरुवाणी द्वारा 30 जोड़ों का दहेज मुक्त विवाह भी संपन्न कराया गया और जिला चिकित्सालय बैतूल से आए स्टाफ की मौजूदगी में अनुयायियों द्वारा 319 यूनिट रक्तदान भी किया गया साथ ही 3440 अनुयायियों द्वारा देहदान के संकल्प फार्म भरे गए। अनुयायियों के अनुसार इस विवाह के साक्षी सभी तैंतीस कोटि देवी देवता बने। समागम में आने वाले श्रद्धालुओं के बैठने के लिए बैठने के लिए विशालकाय शेड बनाया गया है। साथ ही जूता घर,पार्किंग,मोबाइल चार्जिंग,शौचालय आदि की पर्याप्त सुविधा के साथ आध्यात्मिक प्रदर्शनी व निःशुल्क नामदीक्षा की व्यवस्था भी की गई है। फोरलेन से आश्रम तक की दूरी में बने रोड पर लगी आकर्षित लाइटिंग व परमात्मा जी की आकर्षक झांकियां बनाई गई हैं। समागम के दूसरे दिन तक 2000 से अधिक लोगों ने संत रामपाल जी महाराज जी से निःशुल्क नामदीक्षा ग्रहण कर अपने जीवन का कल्याण करवाया। अपने गुरुदेव जी के आदेशानुसार आने वाली सर्व संगत शांतिपूर्वक आकर अमर वाणी को श्रवण कर भंडारा प्रसादी लेकर वापस अपने घर जाती रही। 8 सितंबर को इस महासमागम का अंतिम दिन है। अनुयायियों ने सभी धर्म प्रेमी जनता से आग्रह किया कि वे भी इस पावन अवसर पर आकर पापनाशक भंडारा ग्रहण कर अपने पुण्य कर्म बनाएं।

एवं देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र को दिशा देने वाले टॉर्च बियरर्स होते हैं। मंचासीन प्रबुद्ध सेवा निवृत्त गुरुजनों में डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, डॉ. महेश कुमार मेहता, डॉ. मलखान सिंह चौहान, प्रोफेसर शिवकुमार शुक्ला, प्रोफेसर एस.डी. डोंगरे, शिवनाथ वर्मा, जी.बी. पाटनकर, एस.डी. कापसे, एस.के. पचोरी एवं अन्य वरिष्ठ पेंशनर्स शामिल रहे। इस अवसर पर प्रोफेसर महेश मेहता ने शिक्षा और शिक्षकों के महत्व को प्रतिपादित किया, वहीं डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक समाज का दर्पण हैं। उन्होंने वरिष्ठ पेंशनर्स साथियों के स्वास्थ्य की देखभाल के उद्देश्य से स्वागत शिविर आयोजित करने की घोषणा भी की। पहले चरण में दंत चिकित्सा, अस्थि रोग चिकित्सा एवं हृदय रोग चिकित्सा संबंधी शिविर लगाए जाएंगे। सितम्बर माह में ही प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल के जिलाध्यक्ष सुंदरलाल कड़वे ने इस शिविर के आयोजन की घोषणा की। इस अवसर पर सांसद एवं केंद्रीय राज्यमंत्री

भोपाल में छात्र पर टाइगर का हमला, पैर घायल

- टाइगर के हमले का राजधानी में पहला मामला;

जागरण लेकसिटी यूनिवर्सिटी के पास की घटना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जागरण लेकसिटी यूनिवर्सिटी कैम्पस के पास एक टाइगर ने छात्र पर हमला कर दिया। इससे छात्र का पैर बुरी तरह से घायल हो गया। डीएफओ लोकप्रिय भारती ने बताया, यह टाइग्रेस-123 का एक साल का शावक है। झपट्टा मारने के बाद टाइगर जंगल में चला गया। यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट को सुरक्षा व्यवस्था कड़ी करने को कहा है। वहीं ट्रैप कैमरे भी लगाए गए हैं। टाइगर द्वारा इंसान पर हमले करने का यह राजधानी का पहला मामला है। मामला गुरुवार देर रात का है, लेकिन घटना से जुड़े वीडियो शनिवार को सामने आए। डीएफओ भारती के अनुसार, छात्र रात में कैम्पस और आसपास टहल रहा था। तभी यह मामला सामने आया। फुट प्रिंट के हिसाब से शावक जंगल में चला गया। आसपास सर्चिंग की गई है। शनिवार से ही वन विभाग की टीम मौके पर ही है। संस्थान को नोटिस देकर कहा गया है कि कैम्पस के आसपास तार फेंसिंग को व्यवस्थित कर लें। ताकि, आगे ऐसी घटना सामने नहीं आ सके।

दोस्तों के साथ टहल रहा था छात्र- छात्र मोहम्मद बोरा अपने दो अन्य दोस्तों के साथ टहल रहा था। तभी झाड़ियों से निकलकर बाघ ने हमला कर दिया था। झपट्टा मारने से नाखून एक पैर में लग गए। जिससे एक इंच का घाव हो गया। शोर मचाने और दोस्तों के खींचने से टाइगर झाड़ियों में चला गया। इसके बाद मोहम्मद बोरा को अस्पताल में इलाज कराने के लिए ले जाया गया।

बाघिन के शावकों का मूवमेंट- कलियासोत और केरवा के जंगल में कई टाइगर का मूवमेंट है। कई बार ये सड़कों पर भी नजर आ चुके हैं। कोलार रोड के चूनाभट्टी स्थित भोज यूनिवर्सिटी कैम्पस में भी बाघ का मूवमेंट दिखा था। कलियासोत जंगल और डैम के आसपास बाघिन टी-123 अपने दो शावकों के साथ नजर आती है। शावकों की उम्र करीब एक साल हो चुकी है। वन अधिकारियों का कहना है कि यदि टाइगर वयस्क होता तो हालात और भी बुरे हो सकते थे।

इलाज के बहाने ईसाई बना रहे थे नर्सिंग स्टूडेंट

रतलाम मेडिकल कॉलेज में मरीज पर बनाया धर्म परिवर्तन का दबाव; 4 गिरफ्तार

रतलाम (नप्र)। तुम बार-बार बीमार होते हो। बीमारी प्रभु यीशु की नियमित प्रार्थना से ही दूर होगी। ईसाई धर्म को स्वीकार कर लो।ये बात रतलाम मेडिकल कॉलेज में एक नर्सिंग स्टूडेंट ने मरीज से कही। जिले में इलाज के बहाने कुछ लोग आदिवासियों पर धर्म परिवर्तन का दबाव बना रहे थे। पुलिस ने 4 लोगों पर केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है। इनमें एक आरोपी राजस्थान के बांसवाड़ा का है। वहीं, एक आरोपी रतलाम मेडिकल कॉलेज में पेरामेडिकल स्टाफ (नर्सिंग स्टूडेंट) है। 5 सितंबर को औद्योगिक इलाके में टैंकर रोड पर झोपड़ी में इलाज के बहाने धर्मांतरण की सूचना पर हिंदू संगठनों के पदाधिकारी पहुंचे थे। यहां बड़ी संख्या में आदिवासी महिला और बच्चे मौजूद थे। सभी को इलाज और प्रार्थना के बहाने बुलाया था। झोपड़ी में बाइबल और क्रॉस भी मिला था। हिंदू संगठनों के लोगों ने मौके से चार लोगों को पकड़ा था। पुलिस ने चारों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उन्होंने धर्मांतरण कराने की बात कबूल कर ली। शनिवार शाम को चारों पर धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत एफआईआर दर्ज की गई।

बीमारी ठीक न हो तो मुझे बताना- विरियाखेड़ी के रहने वाले कैलाश निनामा ने शिकायत में पुलिस को बताया, मैं अनुसूचित जनजाति में आता हूं और मजदूरी करता हूं। 4-5 माह पहले स्वास्थ्य खराब होने पर मेडिकल कॉलेज गया था। यहां, जगदीश निनामा (30) मिला। उसने कहा कि तुम्हें बीमारी में फायदा न हो तो मुझसे मिलना। इसके बाद मैं अपना इलाज कराकर घर आ गया।

कुछ दिन बाद जगदीश फिर मिला। उसने कहा कि मैं प्रभु यीशु की प्रार्थना करता हूं। मैं तुम्हारे लिए भी प्रार्थना करूंगा। वो तुम्हारे सारे दुख दूर करेंगे। शिवनगर में रहने वाले मेरे भाई विक्रम निनामा के घर हर शुक्रवार को प्रभु यीशु की प्रार्थना होती है। तुम शिवनगर आ जाना।इसी घर में जगदीश का भाई विक्रम लोगों को प्रार्थना के लिए बुलाता था।

बीमारी से छुटकारा पाना है तो प्रार्थना करो- कैलाश ने पुलिस को बताया, 5 सितंबर की सुबह करीब 9 बजे मैं जगदीश के भाई विक्रम के घर गया। यहां जगदीश, विक्रम और मांगीलाल व अन्य लोग मिले। कुछ समय बाद विक्रम ने यीशु की प्रार्थना की। प्रसादी लेने के बाद लगभग सभी लोग चले गए। मैं वहीं पर था। जगदीश, विक्रम, मांगीलाल और अन्य व्यक्तियों ने मुझ पर ईसाई धर्म अपनाने के लिए दबाव बनाया। जगदीश ने कहा कि विक्रम ने प्रार्थना से कई लोगों की बीमारी ठीक की है।

प्रसाद लेने के बाद मानसिक संतुलन खो बैठा

कैलाश निनामा ने बताया कि उस पर धर्म परिवर्तन करने का दबाव बनाया गया। वहां पर प्रसाद लिया था इस कारण मानसिक संतुलन खो बैठा था। विक्रम और उसके साथी वहां पर लोगों का सामूहिक धर्म परिवर्तन करवा रहे थे। कई लोगों की आंखों पर रूमाल बांधकर और सिर पर हाथ रखकर प्रार्थना करवा रहे थे। इसमें महिलाएं और बच्चे भी थे, जिनकी उम्र 18 साल से कम थी। पुलिस ने जगदीश निनामा (30) निवासी गंगासागर, विक्रम निनामा (35) निवासी शिवनगर, मांगीलाल (35) निवासी बांसवाड़ा और गुड्डू उर्फ गुड्डा (18 साल) निवासी शिवगढ़ को गिरफ्तार कर लिया है।

एक की भूमिका सामने नहीं आई तो छोड़ा

पुलिस ने 4 लोगों को हिरासत में लिया था, जिसमें से एक नाबालिग था। उसकी कोई भूमिका सामने नहीं आने पर उसे छोड़ दिया। थाना औद्योगिक के सब इंस्पेक्टर व जांच अधिकारी ध्यानसिंह सोलंकी ने बताया कि विक्रम फरार हो गया था, जिसे आज पकड़ लिया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में पता चला कि विक्रम भी मेडिकल कॉलेज में पानी सप्लाई का काम करता है। चारों आरोपियों को कोर्ट में पेश करेंगे, जहां रिमांड की मांग की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

निसरपुर में आठ माह के बच्चे की जन्मजात हृदय रोग से सफल सर्जरी आयुष्मान भारत योजना से मिली नई ज़िंदगी

धार (निप्र)। ग्राम कंदमाल विकासखण्ड निसरपुर के दीपक जमरा के आठ माह के पुत्र रुद्र जमरा को जन्मजात हृदय रोग की गंभीर बीमारी थी। बच्चा लगातार कमजोर और बीमार रहता था। परिवार अत्यंत गरीब होने के कारण उपचार कराना संभव नहीं था। आरबीएसके टीम ने की पहचान सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र निसरपुर की राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) टीम नियमित जांच के दौरान आंगनवाड़ी एवं विद्यालयों में भ्रमण कर बच्चों की बीमारियों की पहचान करती है। इसी जांच में रूद जमरा की बीमारी का पता चला। टीम ने बच्चे के माता-पिता को सर्जरी की आवश्यकता बताई और जानकारी दी कि यह शल्यक्रिया शासन द्वारा नि :शुल्क कराई जाएगी। धार से इंदौर एम.वाय. अस्पताल तक इसके बाद बच्चे को प्रारम्भिक स्वास्थ्य परीक्षण हेतु जिला अस्पताल धार ले जाया गया। परीक्षण के उपरांत आयुष्मान भारत नियम योजना के अंतर्गत उसका प्रकरण इंदौर एम.वाय. अस्पताल भेजा गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी धार द्वारा अनुमोदन मिलने के बाद 17 जुलाई 2025 को बच्चे को एम.वाय. अस्पताल में भर्ती किया गया।

फोटो युक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2025 की तैयारी हेतु प्रक्रिया एवं मतदाता सूची तैयार करने के संबंध में कार्यशाला का आयोजन

अलीराजपूर (निप्र)। राज्य निर्वाचन आयोग म.प्र के निर्देशानुसार फोटो युक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2025 की तैयारी हेतु प्रक्रिया एवं मतदाता सूची तैयार करने के संबंध में कार्यशाला का आयोजन कलेक्टर सभा कक्ष में उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं संयुक्त कलेक्टर श्री मनोज गरवाल की अध्यक्षता में किया गया । उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री गरवाल ने बताया कि जिन नगरीय निकायों एवं पंचायत की मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य उप निर्वाचन वर्ष 2025 (पूर्वार्द्ध) हेतु किया जा चुका है उन निकायों को छोड़कर शेष निकायों का पुनरीक्षण किया जाना है , इस कार्य को गंभीरता से लेकर तय समय सीमा में पूर्ण करें ।इस दौरान मास्टर ट्रेनर श्री राकेश अवास्या द्वारा प्रथम चरण मे कंट्रोल टेबल का वेरिफिकेशन एवं अपडेटशन , द्वितीय चरण में विधानसभा की अंतिम प्रकाशित मतदाता सूची के आधार पर ग्राम पंचायत एवं नगरीय निकाय की प्रारूप मतदाता सूची तैयार करना ,नये एवं बढ़े हुए मतदाताओं को नगरपालिका वार्ड अथवा पंचायत में शिफ्ट करना ,मतदाता सूची से विलोपित मतदाताओं को मतदाता सूची से हटाने के लिए वेरिफिकेशन जैसे महत्वपूर्ण कार्य की बिंदुवार जानकारी दी गई।

गांवों व शहरों में हर सप्ताह रक्तदान शिविर आयोजित करें

खण्डवा (निप्र)। कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक सप्ताह में चार-पांच स्थानों पर रक्तदान शिविर आयोजित करने की व्यवस्था करें और शासन से रक्तदान शिविरों के लिए मिले वाहन का अधिकतम उपयोग करते हुए रक्तदान अभियान को सफल बनाएं। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में सोमवार को आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में कलेक्टर श्री गुप्ता ने जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को निर्देश दिए कि ग्रामीण क्षेत्र में रक्तदान शिविरों के स्थान और समय का पहले से निर्धारण कर उनका व्यापक प्रचार प्रसार करें तथा रक्तदाताओं को पहले से तैयार कर लें। बैठक में जिला पंचायत के सीईओ डॉ. नागार्जुन बी. गौड़ा, एसडीएम पुनासा श्री शिवम प्रजापति, सहायक कलेक्टर डॉ. श्रीकृष्णा सुशिर, अपर कलेक्टर श्री के.आर. बड़ोले, सहायक आयुक्त अनुसूचित जनजातीय कार्य विभाग सहित श्री संतोष शुक्ला सहित अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद थे।

'सिंहस्थ-2028 संबंधित सभी निर्माण कार्यों को समय से पूर्ण किया जाए'

उज्जैन (निप्र)। उज्जैन सिंहस्थ मेला अधिकारी श्री आशीष सिंह ने सिंहस्थ 2028 के विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक लेकर संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए की सिंहस्थ के चल रहे निर्माण कार्यों को आपसी समन्वय से समयसीमा में पूर्ण कराये। निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान दिया जाए । जिन निर्माण कार्यों में तकनीकी या अन्य समस्या हो उसे अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर हल किया जाए ।सिंहस्थ मेला अधिकारी श्री सिंह ने बैठक में रेलवे स्टेशन से श्री महाकालेश्वर मंदिर तक रोपवे परियोजना, खान डायवर्सन क्लोज डक्ट परियोजना, सेवरखेडी-सिलारखेडी परियोजना, जयसिंह पुरा पर रेलवे अंडरपास, सिन्धी कॉलोनी से हरिफाटक ब्रिज तक मार्ग का चौड़ीकरण, हनुमान नाका से हरिफाटक ब्रिज तक मार्ग का चौडीकरण, इंदिरा गांधी चौराहा से चामुण्डा माता चौराहा के बीच फ्रीगंज आर.ओ.बी. के समान्तर आरओबी का निर्माण, उज्जैन-लालपुर-

मक्सी मार्ग में समपार क्रमांक 7 पर पूर्व से निर्माणाधीन आर.ओ.बी. के समानांतर एक अतिरिक्त आर.ओ.बी का निर्माण, उज्जैन मक्सी मार्ग पर उज्जैन शहर में पुराने समपार क्र. 2 पूर्व पुल के समानांतर उज्जैन इंदौर रेल सेक्शन पर आई.टी.आई के सामने टू-लेन अतिरिक्त आर.ओ.बी. का निर्माण, लालपुर के डाउन स्ट्रीम में रेल्वे पुल के समानांतर क्षिप्रा नदी पर नवीन फोर लेन पुल निर्माण, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी आदि निर्माण कार्यो की विस्तार से समीक्षा की। उन्होने संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए । सिंहस्थ मेला अधिकारी श्री आशीष सिंह ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए की उनकी निर्माण कार्यों में अहम भूमिका है, उन्होंने निर्देश दिए की सिंहस्थ के निर्माण कार्यो की माइक्रो प्लानिंग कर निर्माण कार्यों को समय पर पूर्ण किया जाए । रेलवे के अधिकारियों से समन्वय स्थापित करने के लिए दो अधिकारियों को नियुक्त किया जाए, ताकि समय-समय पर रेलवे संबंधित समस्याओं का निराकरण किया जा सके ।बैठक में कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने सिंहस्थ के विभिन्न निर्माण कार्यों की विस्तार से जानकारी दी तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए । बैठक में रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी श्री के.एल मीणा ने भी रेलवे से संबंधित तकनीकी समस्याओं का समय पर निराकरण कर सिंहस्थ कार्यों को पूर्ण करने के लिए अपने रेलवे के संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए । बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा, श्री विवेक ढांड, नगर निगम आयुक्त श्री अभिलाष मिश्रा तथा संबंधित विभागो के अधिकारी, रेलवे अधिकारी आदि उपस्थित थे।

व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण : कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग

शिक्षक दिवस पर उत्कृष्ट स्कूल में शिक्षक, विद्यार्थी एवं प्राचार्य सम्मानित

मंदसौर (निप्र)। शिक्षक दिवस के अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मंदसौर में आयोजित जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं प्राचार्यों को सम्मानित किया। कलेक्टर ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। उन्होंने सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जीवन में जिससे सीखने को मिलता है, उसे गुरु का दर्जा देना चाहिए। मां बच्चे की पहली शिक्षक होती है और भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि शिक्षक न केवल विद्यार्थियों को अकादमिक स्तर पर श्रेष्ठ बनाते हैं, बल्कि उनके व्यवहारिक जीवन को भी संवारने का कार्य करते हैं। कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए कि 15 सितम्बर के पश्चात सभी विद्यालयों में पालक-शिक्षक बैठक आयोजित की जाए, जिसमें बच्चों के परीक्षा परिणाम तथा खेलकूद गतिविधियों पर विशेष चर्चा हो। उन्होंने कहा कि बच्चों के भविष्य निर्माण में अभिभावकों की भी अहम भूमिका होती है। समारोह में जिला शिक्षा अधिकारी सुश्री टेरेसा मिंज, श्री लोकेंद्र डाबी, बीईओ श्री आनंद डावर सहित प्राचार्य, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लोकोस ट्राजेक्शन एप पर चार दिवसीय प्रशिक्षण सपन्न

धार (निप्र)। म.प्र. राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत जिले में गठित समस्त स्व सहायता समूहों, ग्राम संगठनों एवं संकुल स्तरीय संगठनों के ट्राजेक्शन की लोकोस एप पर प्रविष्टि हेतु चार दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन सीटीस मांडव में किया गया।

प्रशिक्षण में 12 विकासखंडों से 4 मास्ट्रेनर, 14 मिशन स्टाफ, सीएलएफ, ग्राम संगठन व समूहों के पुस्तक संचालक (बीके) सहित कुल 60 प्रतिभागी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में तीनों सगठनों की कट ऑफ शीट तैयार करना, उनकी आन लाईन प्रविष्टि करना आदि के बारे मे पीपीटी, आन लाईन प्रविष्टि के बारे में सभी को विस्तार पूर्वक बताया गया। जिसमें सभी तीनों संगठनों की चल अचल संपत्ति, प्राप्तियॉ, दायित्व, आय एवं व्यय को आडिट रिपोर्ट से तैयार करना एवं इसकी प्रविष्टि करने के बारे में सभी को आन लाईन बतया गया व सभी से चर्चा कर उनकी समस्या का समाधान किया गया। प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर के रूप में जिला प्रबंधक सूक्ष्म वित्त श्री प्रवीण सोलंकी एवं श्री गौरीशंकर सवनेर, श्री जितेन्द्र पटेल, श्री विरेन्द्र ठाकुर, सहा. विकासखंड प्रबंधक, सुश्री संजना मालवीय ऋक किपर विकासखंड कुक्षी रहे। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस जिला परियोजना प्रबंधक श्री प्रमोद दुसाने के द्वारा सभी प्रतिभागियों से चर्चा कर उनके द्वारा 4 दिवस प्रशिक्षण की सीख पर सभी प्रतिभागियों के जानकारी ली गई।

अतिवृष्टि में बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एसडीईआरएफ सहित प्रशासनिक अधिकारी तैनात बाढ राहत कार्य जारी

रतलाम (निप्र)। जिले में हो रही लगातार भारी बारिश के चलते कलेक्टर श्री राजेश बाथम के निर्देशानुसार जल भराव एवं बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एस डी ई आर एफ सहित प्रशासनिक अधिकारी नदी/नालों, पुल/पुलियाओं पर सतत् निगरानी रखे हुए है।

एसडीएम, तहसीलदार/नायब तहसीलदार नगरीय निकाय, ग्रामीण विकास विभाग एवं आपदा प्रबंधन से संबंधित अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में सतत् भ्रमण कर आमजन को बाढ़/अतिवृष्टि की स्थिति में सहायता प्रदान कर रहे है एवं नदी/नाले पार नहीं करने एवं पुल /पुलियाओं पर बाढ़ का पानी होने की स्थिति में आवागमन नहीं करने के लिए समझाईश दे रहे है। घरो मे पानी भरने की स्थिति मे रहवासियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा रहे हैं ।

हाथीखाना रतलाम में जल भराव की सूचना पर एस डी ई आर एफ की टीम घटनास्थल पर पहुंची। नाली का चैंबर ब्लॉक था, पत्थर हटा दिया गया है पानी कम हुआ है। रतलाम शहर में जलभराव की स्थिति वाले सभी ईलाको मे टीम तैनात हैं। एस डी एम विवेक सोनकर ने बताया कि ग्राम पलडूना मे घर में पानी भर आया था जेसीबी से निकाल दिया गया है, स्थिति सामान्य है। बाढ़ प्रभावित सभी क्षेत्रों में प्रशासनिक अधिकारी निगरानी बनाये हुए है।

विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2025-26 परीक्षा को लेकर उत्कृष्ट विद्यालय देवास में बैठक का आयोजन हुआ

विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2025-26 राष्ट्रीय परीक्षा हेतु रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 30 सितंबर

विजेता छात्र इसरो, डी.आर.डी.ओ, आई.आई.टी, आदि राष्ट्रीय संस्थानों में इंटर्नशिप करेगें

देवास (निप्र)। विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2025-26 परीक्षा को लेकर आज उत्कृष्ट विद्यालय देवास में ब्रोशर लॉन्चिंग एवं ओरिएंटेशन बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें परीक्षा के राज्य समन्वयक डॉ. शिव मेवाड़ा एवं श्री संतोष वर्मा के द्वारा सभी स्कूलों के विज्ञान शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया गया। राज्य समन्वयक डॉ. मेवाड़ा ने बताया कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा वी.वी.एम. परीक्षा स्कूली छात्रों के लिए भारत की सबसे बड़ी विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा है। इसका उद्देश्य छात्रों में मूलभूत विज्ञान के प्रति रुचि जागृत विज्ञान को लोकप्रिय बनाना, पारंपरिक से लेकर आधुनिक काल तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के योगदान के बारे में शिक्षित करना, प्रयोगात्मक कौशल परीक्षणों के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले छात्रों की पहचान करने के लिए प्रतिस्पर्धी परीक्षाएँ आयोजित करना, छात्रों को विज्ञान के क्षेत्र में आगे की शिक्षा हेतु तैयार करने के लिए मार्गदर्शक प्रदान करना, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सफल छात्रों की पहचान करना और उन्हें सम्मानित करना। विजेताओं के लिए देश के विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थानों जैसे इसरो, डीआरडीओ, आईआईटी बड़े संस्थानों में शैक्षिक भ्रमण आयोजित करना है।

यह परीक्षा चार स्तर पर आयोजित की जाएगी। पहला चरण में जिसमें सभी छात्र भाग लेकर ऑनलाईन परीक्षा देंगे। दूसरे चरण में ऑनलाईन परीक्षा जिसमें पहले चरण के उत्तीर्ण छात्र भाग लेंगे। तीसरा चरण राज्य स्तर पर आईआईटी इंदौर और आर.आर.केट, इंदौर जैसी प्रतिष्ठित संस्था आयोजित द्वारा आयोजित किया जाएगा। राज्य स्तर पर प्रति कक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः

5000, 3000, 2000, मोमेंटो और सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। तीसरे चरण में प्रथम और द्वितीय स्थान पाने वाले प्रती कक्षा के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय लेवल के कैंप में भाग लेने का मौका मिलेगा, जो विद्यार्थी राष्ट्रीय लेवल की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्राप्त करेंगे उन्हें क्रमशः 25000, 15000, 10000 नगद पुरस्कार के साथ मोमेंटो और सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। साथ ही नेशनल विजेताओं को 2000 प्रति माह के हिसाब से पूरे एक साल तक भास्कर स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी तथा उन्हें एक से तीन सप्ताह की नेशनल लेवल के इंस्टिट्यूट में सृजन इंटर्नशिप करने का मौका मिलेगा। नेशनल लेवल के कैंप में जो जोनल विनर होंगे उन्हें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः 5000, 3000, 2000 के साथ मोमेंटो और सर्टिफिकेट दिया जाएगा। साथ ही इन्हें सृजन प्रशिक्षण के लिए हर कक्षा से तीन विद्यार्थियों को भेजा जाएगा।

डॉ. मेवाड़ा ने बताया कि वीवीएम 25 वर्षों से पूरे भारतवर्ष में आयोजित की जा रही है जिससे प्रतिवर्ष सैंकड़ों की संख्या में विद्यार्थी फैलोशिप एवं इंटर्नशिप प्राप्त करते हैं और बड़ी संस्थाओं में फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, गणित जैसे विषयों नेशनल लेवल की लैब में वैज्ञानिकों के साथ प्रयोग करने का मौका मिलता है। इस वर्ष यह परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर आयोजित की जा रही है । डॉ रजनीश पोरवाल द्वारा अतिथि एवं शिक्षकों का आभार व्यक्त किया गया इस दौरान बताया गया कि विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2025-26 एक राष्ट्रीय परीक्षा है, जो एन.सी.ई.आर.टी., शिक्षा मंत्रालय, एन.सी.एस.एम., संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं विज्ञान भारती, द्वारा कक्षा 6वीं से 11 वीं के छात्रों के लिये आयोजित की जा रही है। इसका उद्देश्य छात्रों में विज्ञान के प्रति रूचि जगाना और उनकी प्रतिभा को पहचानना है।

माता-पिता और शिक्षक-गुरू होते हैं राष्ट्र निर्माता, उनका सम्मान करें और चुनौतियों का सामना कर आगे बढ़ें- मंत्री श्री सिलावट

मंत्री श्री सिलावट ने शासकीय कन्या हायर सेकेण्डरी सांवेर में मनाया गया शिक्षक दिवस

शिक्षक-विद्यार्थियों और उनके माता-पिता के साथ किया स्नेह भोज

इन्दौर (निप्र)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी सिलावट के मुख्य आतिथ्य में आज शासकीय कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय सांवेर में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उन्होने शिक्षक-विद्यार्थियों और उनके माता-पिता को संबोधित करते हुए कहा कि माता-पिता और शिक्षक-गुरु राष्ट्र निर्माता होते है, उनका सम्मान करें और चुनौतियों का सामना कर आगे बढे।

जीवन में गुरू के ज्ञान से ही देश और प्रदेश का विकास संभव होगा। विकसित भारत बनाने में शिक्षक और विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

शिक्षक द्वारा नित्य नवीन प्रयोग कराये जाने से छात्र वैज्ञानिक, डाक्टर, शिक्षक और कलेक्टर बनकर देश की सेवा करते है। विज्ञान के कारण आज भारत विश्व गुरु बन गया है। आज भारत की गिनती श्रेष्ठ दस देशों में होती है, जिससे हमें गर्व होता है। इसलिए हमें हमेशा माता-पिता और शिक्षक-गुरू का सम्मान करना चाहिए। इस अवसर पर श्री सिलावट ने उपस्थित विद्यार्थियों और उनके माता-पिताओं और शिक्षकों को अपने हाथों से भोजन प्रदान कर उनके साथ स्नेह भोज किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में गणेश पूजन और मां सरस्वती की प्रतिमा पर मार्त्यापण किया गया। 56 भोग भी लगाये गये। इस अवसर पर सर्वश्री भारतसिंह, दिलीप चौधरी, संदीप चंगेडिया, जीतुराज राठौर, सुभाष जैन, सतीश मालवीय, संजय घोडेला और प्राचार्य सरवैया सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार करें और रोचक तरीके से बच्चों को पढ़ाएं शिक्षक - कलेक्टर श्री गुप्ता

खण्डवा (निप्र)। शिक्षक दिवस के अवसर पर शुक्रवार को गौरी कुंज सभागृह में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने कहा कि शिक्षकगण बच्चों को सरल और रोचक तरीके से पढ़ाएं, और अध्यापन के क्षेत्र में नवाचारों को शामिल करें। उन्होंने इस जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में कहा कि दृश्य श्रव्य माध्यम से शिक्षकगण कठिन से कठिन प्रश्न का जवाब विद्यार्थियों को आसानी से समझा सकते हैं।

कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी पी एस सोलंकी ने स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक का कार्य राष्ट्र निर्माण के साथ-साथ श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण करना भी है। जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में विभिन्न श्रेणी में शिक्षकों का सम्मान किया गया। जिसमें सेवानिवृत शिक्षकों, हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा परीक्षा में शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम वाले स्कूलों के शिक्षक, नवाचार करने और उत्कृष्ट परिणाम वाले शिक्षकों, खेलकूद प्रतियोगिताओं में जिले का प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षकों तथा प्रदन्या बुकलेट के

निर्माण करने वाले शिक्षक और उनके साथ ही विकासखंड शिक्षा अधिकारी और विकासखंड स्त्रोत समन्वय को भी को इस कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डाइट केशव पाराशर, प्राचार्य मनोज सराफ, सहायक संचालक नीरज पाराशर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। यह कार्यक्रम पी.डी. डोंगरे, शैलेंद्र सिंह चौहान, मंगलेश उपाध्याय, राजेश भंगाले, गणेश शर्मा , अर्जुन सिंह राजपूत के सहयोग से संपन्न किया गया। कार्यक्रम में प्रदन्या - 2 बुकलेट का विमोचन भी कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन संदीप जोशी ने किया। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन एडीपीसी रमसा सुश्री संगीता सोनवाने द्वारा किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री गुप्ता ने सुश्री रजनी दुबे, सुभाष केशोरे, श्रीमती अलका उपाध्याय प्राचार्य, श्रीमती संगीता सोनवाने, संतोष तिवारी, संध्या मौर्य, अर्जुन सिंह राजपूत, राजेश भंगाले, संजीव खरे, प्रशांत दीक्षित एवं अन्य शिक्षकों को भी सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया मऊगंज के बहुती जल प्रपात का अवलोकन

व्यू प्वाइंट से देखी दूधिया जलधारा

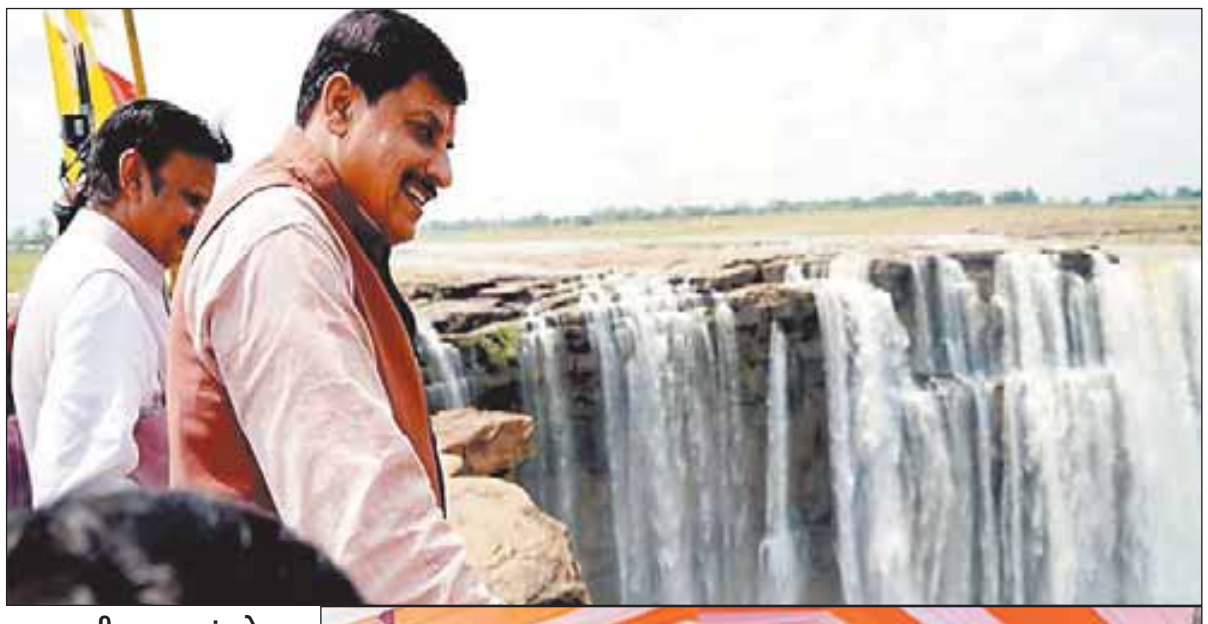

● बहुती प्रपात पहुंचने पर लोक कला की छात्राओं ने बघेली शैला नृत्य प्रस्तुत कर स्वागत किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को मऊगंज जिले के प्रवास पर नई गड़ी जनपद पंचायत के बहुती जल प्रपात का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने वाटरफॉल के नजदीक जाकर व्यू प्वाइंट से जलप्रपात की गिरती हुई दूधिया जल धारा और वहा बनने वाले इंद्रधनुष की आभा को देखा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बहुती जल प्रपात के समीप कार्यक्रम स्थल पर गौपूजन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव से जंगल में विचरण करने वाली गौमाताओं को अपनी एक आवाज में अपने पास बुलाने की कला रखने वाले रकरी गांव के गौसेवक सौखीलाल यादव ने भेंट की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री का प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम की दीदीओं द्वारा सम्मान कर उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का बहुती में हुआ पारंपरिक स्वागत- मुख्यमंत्री डॉ. यादव का बहुती पहुंचने पर पारंपरिक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मऊगंज की लोक कला की छात्राओं ने बघेली शैली नृत्य और स्थानीय लोक कलाकारों के दल ने अहिरहाई लोकनृत्य की प्रस्तुति देकर स्वागत किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल, पशुपालन डेयरी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री लखन पटेल, विधायक सर्वश्री गिरीश गौतम, दिव्यराज सिंह और प्रदीप पटेल सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, कमिश्नर रीवा श्री बी.एस. जामोद, आई.जी. श्री गौरव राजपूत, कलेक्टर श्री संजय जैन एवं पुलिस अधीक्षक श्री प्रजापति सहित नागरिक मौजूद थे।

प्रदेश का सबसे ऊँचा जल प्रपात

बहुती जल प्रपात रीवा से 75 किलोमीटर दूर मऊगंज जिले में स्थित है। यह विन्ध्य क्षेत्र ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश का सबसे ऊंचा जलप्रपात है। बहुती में सेलर नदी 650 फिट की ऊंचाई से दो धाराओं में विभक्त होकर गिरती है। नीचे सुंदर कुंड और चारों ओर घने वन हैं। बहुती में अनंत जलराशि लंबवत चट्टानों पर गिरती है। जुलाई से सितम्बर माह तक इस प्रपात का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। प्रपात के समीप ही अष्टभुजा देवी का प्रसिद्ध मंदिर भी स्थित है। प्रयागराज और बनारस से सड़क मार्ग से सीधे जुड़ा होने से उत्तरप्रदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ पहुंचते हैं। इसके पास भैंसहाई में प्रागैतिहासिक काल के भित्ति चित्र मिले हैं।

पर्यटक स्थल के रूप में किया जा रहा है विकसित

कलेक्टर मऊगंज संजय जैन ने बताया कि बहुती जल प्रपात को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने एवं जन सुविधाओं के विकास के लिए 10 करोड़ रुपए लागत की कार्ययोजना प्रस्तावित की गई है। कलेक्टर ने बातया कि बहुती प्रपात के अप स्ट्रीम में स्टॉप डैम का निर्माण प्रस्तावित है। स्टॉप डैम में जल का संचय होने से वाटर फॉल की जल धारा का बारह माह सदा अविरल प्रवाह बना रहेगा।

मुख्यमंत्री ने देवतालाब शिव मंदिर में भगवान शिव की पूजा अर्चना और रुद्राभिषेक किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को मऊगंज जिले के देवतालाब शिव मंदिर में भगवान शिव के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। उन्होंने भगवान आशुतोष का रुद्राभिषेक भी किया। मुख्यमंत्री ने भगवान शिव से प्रदेश की निरंतर प्रगति और जनकल्याण की कामना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शिवकुंड का अवलोकन किया और इसका सौंदर्यीकरण कराए जाने की बात कही। मंदिर परिसर में अंतर्राष्ट्रीय कलाकार बांकेलाल के शहनाई वादन की मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल, विधायक देवतालाब श्री गिरीश गौतम, विधायक सिरमौर श्री दिव्यराज सिंह, विधायक त्योंथर श्री सिद्धार्थ तिवारी सहित जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी सहित स्थानीय जन उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि विंध्य की धरा में मऊगंज जिले के देवतालाब शिव मंदिर का विशिष्ट स्थान है। कहा जाता है कि भगवान विश्वकर्मा ने केवल एक रात में एक ही पत्थर से शिव मंदिर का निर्माण किया था। रीवा-बनारस हाईवे पर स्थित देवतालाब शिव मंदिर में साल भर भक्तों की भीड़ रहती है। विंध्य में परंपरा रही है कि बद्रीनाथ और चारोंधाम की यात्रा का फल तभी मिलता है जब देवतालाब में भगवान शिव के दर्शन किए जाएं। चारधाम यात्रा के बाद भी लोग देवतालाब अवश्य जाते हैं।

सुमन सखी चैटबॉट नागरिक-केंद्रित सुशासन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

मध्यप्रदेश में एआई आधारित सुमन सखी चैटबॉट सेवा शीघ्र होगी प्रारंभ

● प्रारंभिक चरण में फोकस मातृ स्वास्थ्य पर अगले चरण में समस्त स्वास्थ्य सेवाओं में होगा विस्तार

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया विज़न के अनुरूप स्वास्थ्य सेवाओं में नवीनतम तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। इसी कड़ी में प्रदेश में जल्द ही सुमन सखी चैटबॉट सेवा प्रारंभ की जा रही है।

सुमन सखी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित चैटबॉट होगा, जो नागरिकों को गर्भावस्था के दौरान देखभाल, उच्च जोखिम कारकों की जानकारी, तथा महिलाओं से संबंधित सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं और सेवाओं की जानकारी आसानी से उपलब्ध कराएगा।

उन्होंने कहा कि यह पहल प्रदेश में नागरिक-केंद्रित सुशासन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

यह सेवा न केवल योजनाओं की जानकारी और सेवाओं तक त्वरित पहुँच उपलब्ध कराएगी, बल्कि शासन की पारदर्शिता और जनविश्वास को भी मज़बूत करेगी। मिशन डायरेक्टर एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना ने बताया कि सुमन सखी चैटबॉट राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मध्यप्रदेश द्वारा मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (एमपीएसईडीसी) के सहयोग से विकसित किया गया है। सुमन सखी चैटबॉट 24×7 उपलब्ध रहेगा और हिंदी भाषा में होगा, ताकि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की महिलाएँ भाषा की किसी भी बाधा के बिना इसका लाभ उठा सकें।

प्रारंभिक चरण में इसका फोकस मातृ स्वास्थ्य सेवाओं पर होगा और धीरे-धीरे अन्य प्रमुख योजनाएँ भी इसमें शामिल की जाएँगी। नागरिक इसे व्हाट्सएप के माध्यम से उपयोग कर सकेंगे।

शोरूम संचालक ने महिला कर्मचारी से रेप किया

विवाहित महिला को शादी का झांसा देकर बनाए संबंध, आरोपी फरार

भोपाल (नप्र)। भोपाल की निशातपुरा पुलिस ने एक विवाहिता की शिकायत पर रविवार को शोरूम संचालक के खिलाफ रेप का केस दर्ज किया है। दरअसल पीड़िता आरोपी के शोरूम की कर्मचारी थी। 10 अगस्त 2025 को काम के बहाने आरोपी ने महिला को मिलने बुलाया। निशातपुरा थाना क्षेत्र के एक होटल में ले जाकर उसके साथ रेप किया। घटना के संबंध में किसी को भी बताने पर जान से मारने की धमकी देकर छोड़ दिया। घटना के बाद पीड़िता ने शोरूम जाना छोड़ दिया। परिजनों को घटना की जानकारी दी, उनके समझाने पर थाने पहुंचकर एफआईआर दर्ज करा दी। निशातपुरा पुलिस के मुताबिक 28 वर्षीय पीड़िता नारियलखेड़ा इलाके में रहती है। दो महीने पहले जॉब की तलाश में थी। किसी के बताने पर वे निजामउद्दीन कॉलोनी में रहने वाले कुलदीप भदौरिया के ऑफिस पहुंची। कुलदीप टाइल्स शोरूम का संचालन करता है। आरोपी ने पीड़िता का इंटरव्यू लिया और नौकरी पर रख लिया। 10 अगस्त को आरोपी ने पीड़िता को काम से चलने के बहाने बुलाया। मिनाल गेट नंबर दो से उसे अपनी कार में बैठाया और पीपुल्स मॉल के करीब एक होटल में ले गया। यहां एक कमरे में ले जाकर पीड़िता के साथ रेप किया। वारदात के संबंध में किसी को भी बताने पर आरोपी ने पीड़िता को जान से मारने की धमकी दी। इतना ही नहीं पीड़िता को जल्द शादी करने का झांसा भी पीड़िता को दिया।

श्रीमती नलिनी पटेल को उत्कृष्ट शिक्षिका सम्मान

भोपाल। सदुरू नागरिक सहकारी बैंक द्वारा रविवार को श्री अरविंदो स्कूल की प्राचार्या श्रीमती नलिनी पटेल को उत्कृष्ट शिक्षिका के रूप में सम्मानित किया गया। समन्वय भवन में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में श्रीमती पटेल को यह सम्मान वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल, सदुरू नागरिक सहकारी बैंक के अध्यक्ष विलास बुचके ने प्रदान किया। साथ में हैं, बैंक की उपाध्यक्ष श्रीमती रोहिणी शिंगवेकर तथा बैंक के सीईओ अजय खंगन।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ में 14 मंत्रियों का मामला हाईकोर्ट के पाले में

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने लंबे इंतजार के बाद पिछले महीने विदेश जाने से पहले अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर तीन नए मंत्री बनाए। इससे मंत्रिमंडल में मंत्रियों की संख्या मुख्यमंत्री समेत 14 हो गई। मंत्रिमंडल में अधिकतम संख्या का फार्मूला लागू होने के बाद छत्तीसगढ़ में पहली दफे 14 मंत्री हुए। डॉ रमन सिंह ने 13 मंत्रियों से काम चलाया और भूपेश बघेल के कैबिनेट में भी 13 मंत्री रहे। कहते हैं कायदे से विधानसभा की सदस्य संख्या के अनुपात में 15 फीसदी से अधिक मंत्री नहीं होने चाहिए। छत्तीसगढ़ विधानसभा में 90 विधायक हैं ऐसे में 13.5 मंत्री होने चाहिए। भूपेश बघेल के कार्यकाल तक साढ़े 13 को 13 मानकर मंत्री रखे गए। विष्णुदेव साय ने हरियाणा फार्मूला लागू कर साढ़े तरह को 14 मानकर कैबिनेट बना लिया। पहले तो इस पर कांग्रेस ने आपत्ति की। नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत ने राज्यपाल रमेन डेका को पत्र लिखकर एक मंत्री को बर्खास्त करने की मांग की। इसके बाद बासु चक्रवर्ती और अन्य कुछ सामाजिक कार्यकर्ता 14 मंत्री के मुद्दे पर बिलासपुर हाईकोर्ट चले गए। हाईकोर्ट ने याचिका स्वीकार कर सुनवाई शुरू कर दी है। अब गेंद कोर्ट के पाले में हैं। कोर्ट क्या फैसला देता है, इसका सबको इंतजार है। पर फैसला आने तक तो राज्य में मुख्यमंत्री सहित 14 मंत्री रहेंगे। हाईकोर्ट से मामला सुप्रीम कोर्ट भी जा सकता है। इसलिए जल्दी कुछ होगा, इसकी उम्मीद कम ही लग रही है।

अब क्या हर मंत्री का 'सदन' बनेगा ?

आमतौर पर छत्तीसगढ़ में जो भी मुख्यमंत्री रहा, अपने विधानसभा के लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए एक सदन बनवा लिया। अजीत जोगी ने 'मरवाही सदन' बनवाया, तो डॉ रमन सिंह ने 'राजनांदगांव सदन'। भूपेश बघेल ने 'पाटन सदन' बनवाया। वर्तमान मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के राज में 'कुनकुरी सदन' चल रहा है, क्योंकि विष्णुदेव साय कुनकुरी से विधायक हैं। कहते हैं मुख्यमंत्री की देखा-देखी उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री विजय शर्मा ने 'कवर्धा सदन' की नींव रख दी है। राज्य निर्माण के 25 साल में पहली दफे मुख्यमंत्री के अलावा किसी अन्य मंत्री ने अपने विधानसभा के नाम सदन की परंपरा डाली है। इस कारण चर्चा चल पड़ी है कि क्या अब छत्तीसगढ़ में प्रत्येक मंत्री अपने विधानसभा क्षेत्र के नाम से एक सदन चलाएंगे। राज्य के कई मंत्री अपने बंगले से ही अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों की सेवा करते हैं। इसमें इलाज करवाने से लेकर उनकी अन्य समस्याओं का समाधान करने की व्यवस्था करते हैं। वैसे गृह मंत्री विजय शर्मा का 'कवर्धा सदन' पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के एक ट्वीट से चर्चा में हैं। भूपेश बघेल ने ट्वीट कर जानकारी दी है कि विजय शर्मा के 'कवर्धा सदन' के निर्माण में लगे एक कैदी फरार हो गया है। भूपेश बघेल ने ट्वीट में और भी कई सवाल उठाए हैं। विजय शर्मा जेल विभाग के भी मंत्री हैं। पहली बार की विधायकी में ही विजय शर्मा को उपमुख्यमंत्री की ताजपोशी का तेज दौड़ अब क्या रंग लाता है, देखना होगा ?

चौबे जी को दांव उलटा पड़ा

एक कहावत है 'चौबे जी चले छब्बे बनने,दुबे बनकर लौटे', ऐसा ही कुछ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री रविंद्र चौबे जी के साथ हो गया। रविंद्र चौबे ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाए जाने का बयान देकर कांग्रेस में हलचल मचा दी, पर साथ में खुद घिर भी गए। चर्चा है कि रविंद्र चौबे का भूपेश बघेल प्रेम दुर्ग जिले की राजनीति के कारण उपजा और 2018 से 2023 के बीच भूपेश बघेल का रविंद्र चौबे के प्रति अहसान। अपने बयान से घिरे रविंद्र चौबे को पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज की शरण में आखिर जाना पड़ा, पर रविंद्र चौबे जैसे चतुर राजनीतिक खिलाड़ी का धारा के विपरीत बहना चर्चा का विषय है। रविंद्र चौबे के बयान के बाद नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत भी हमलावर हो गए और चमचों को संभालने की नसीहत दे डाली। चर्चा है कि भूपेश बघेल का खेमा न तो बैज को पसंद कर रहा है और न ही महंत को। यह खेमा भूपेश बघेल को कमान सौंपकर उमेश पटेल को नेता प्रतिपक्ष बनाने के पक्ष में है। अब रविंद्र चौबे पीसीसी अध्यक्ष की मौजूदगी में कुछ भी कहें, कुछ तो खिचड़ी पक रही थी। धुआं तो तभी उठता है, जब आग जलाने की कोशिश होती है।

मजबूत हुए आईएफएस अरुण पांडे

1994 बैच के आईएफएस अरुण पांडे को पीसीसीएफ वन्यप्राणी के साथ योजना और बजट का प्रभार दिया गया है। दोनों प्रभार मिलने से अरुण पांडे को वन विभाग का मजबूत अफसर माना जा रहा है। आईएफएस सुधीर अग्रवाल के 31 अगस्त को रिटायर होने के बाद पीसीसीएफ वन्य प्राणी का पद रिक्त हो गया था। पीसीसीएफ वन्य प्राणी के लिए कई अफसर दावेदार थे। वन विभाग में हाफ (हेड आफ फारेस्ट) के बाद पीसीसीएफ वन्य प्राणी को मुख्य पद माना जाता है। वन विभाग के वर्तमान मुखिया वी श्रीनिवास राव के रिटायरमेंट के बाद अरुण पांडे को हेड आफ फारेस्ट का मुख्य दावेदार माना जा रहा है। श्रीनिवास राव 2026 में रिटायर होंगे। अरुण पांडे से कई वरिष्ठ भी 2026 में रिटायर हो जाएंगे। अरुण पांडे 2027 में रिटायर होंगे।

कौन बनेगा छत्तीसगढ़ का अगला सीएस ?

छत्तीसगढ़ के अगले मुख्य सचिव को लेकर कुहासा छंट नहीं पा रहा है। मुख्य सचिव अमिताभ जैन की सेवावृद्धि अवधि इस महीने समाप्त हो जाएगी। परिस्थितियों में कोई बदलाव नहीं आया है। वही दावेदार मैदान में हैं। छत्तीसगढ़ में पदस्थ अफसरों में से सीएस बनाया गया तो सुब्रत साहू और मनोज पिंगुआ आगे चल रहे हैं। दिल्ली से भेजा गया तो अमित अग्रवाल और विकासशील का नाम है। भारत सरकार ने मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव अनुराग जैन को एक साल की सेवावृद्धि दे दी है, ऐसे में भारत सरकार की नजर में कोई अफसर समझ में नहीं आया तो फिर अमिताभ जैन की लाटरी लगने की संभावना है। माना जा रहा सीएस की नियुक्ति दिल्ली पर ही निर्भर करेगा।

कौन होगा मुख्यालय महामंत्री

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने नई कार्यकारिणी में महामंत्री संगठन के अलावा तीन महामंत्री बनाए हैं। इनमें यशवंत जैन, अखिलेश सोनी और नवीन मार्कण्डेय हैं। महामंत्री संगठन पवन साय हैं। कहते हैं कि नई टीम में मुख्यालय की कमान किस महामंत्री को मिलने वाला है, इसको लेकर लोगों में भारी उत्सुकता है। चर्चा है कि महामंत्री मुख्यालय बनने के लिए यशवंत जैन और अखिलेश सोनी पूरी ताकत लगाए हुए हैं। मुख्यालय महामंत्री के हस्ताक्षर से ही कई आदेश जारी होते हैं और महामंत्री मुख्यालय पार्टी दफ्तर के केंद्र में रहता है। इस कारण महामंत्री मुख्यालय को अहम पद माना जाता है। अब देखते हैं यशवंत जैन के हाथ बाजी लगती है या अखिलेश सोनी के, या फिर जैन-सोनी के द्वंद्व में नवीन मार्कण्डेय की किस्मत चमकती है। वैसे प्रचार युद्ध में तो अखिलेश सोनी आगे नजर आ रहे हैं। सरगुजा संभाग के रहने वाले अखिलेश सोनी के काफी होर्डिंग्स राजधानी में नजर आ रहे हैं।

दो आईजी की संविदा नियुक्ति चर्चा में

कहते हैं सेवानिवृत पुलिस महानिरीक्षक बी एस ध्रुव और एस सी द्विवेदी की संविदा नियुक्ति चर्चा में है। एस सी द्विवेदी 2003 बैच के प्रमोटी आईपीएस हैं और इस साल अप्रैल में रिटायर हुए हैं। बी एस ध्रुव 2006 बैचझ के प्रमोटी आईपीएस हैं। वे पिछले साल रिटायर हुए। सरकार ने दोनों को एक-एक साल की संविदा नियुक्ति देकर पुलिस मुख्यालय में ओएसडी बनाया है। अब ये दोनों क्या काम करेंगे, इसको लेकर सुगबुगाहट है। क्योंकि डीजी के पद पर बहाल होने के कई महीनों बाद भी सरकार ने जी पी सिंह को अब तक कोई प्रभार नहीं दिया है। कई आई जी और डीआईजी स्तर के पुलिस अफसर सहायक के तौर पर काम कर रहे हैं। वैसे कहा जा रहा है साय की सरकार प्रमोटी आईपीएस अफसरों पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान है। कई बड़े जिलों की कमान प्रमोटी आईपीएस अफसरों के हाथों ही है।

प्रमोशन आदेश के इंतजार में इंस्पेक्टर

कहते हैं 46 इंस्पेक्टरों का डीएसपी के पद पर प्रमोशन आदेश जारी होते-होते रुक गया। चर्चा है कि अब तक प्रमोशन के बाद डीएसपी के पद पर गृह मंत्री के दस्तखत से आदेश जारी हो जाता था, लेकिन इस बार सीएम के दफ्तर ने प्रमोशन के बाद पोस्टिंग की फाइल तलब कर ली। करीब डेढ़ महीने से प्रमोशन आदेश पर ब्रेक लगा हुआ है। बताते हैं खाली पदों की तलाश की जा रही है। अब कब तक खाली पद तलाशें जाएंगे और प्रमोशन आदेश जारी होगा, यह भगवान ही जानें। खानापूर्ति, या कहे पुख्ता काम होते तक, तो बांट जोहना ही पड़ेगा।